चौबीस ठाणा

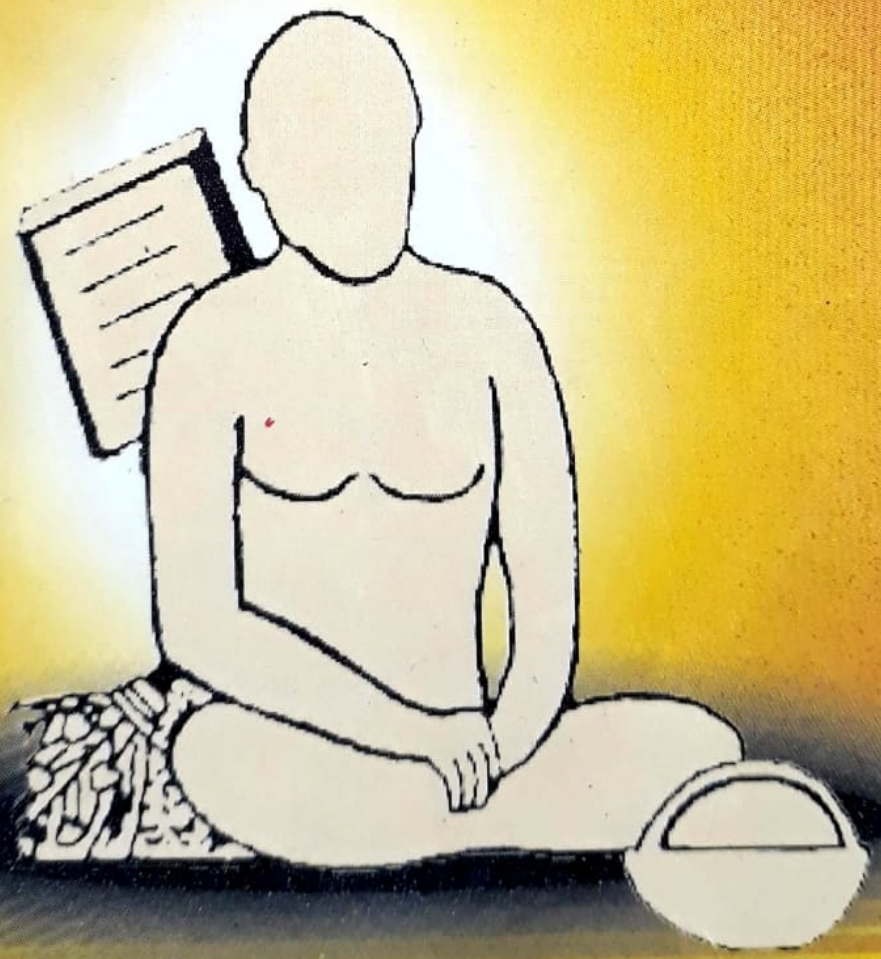

Scanned by CamScanner

हमारी भावना

बीसवीं शताब्दि के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्री शान्ति सागर जी महाराज के तृतीय पट्टाधीश आचार्य शिरोमणि श्री धर्मसागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री अमित सागर जी महाराज निरन्तर अध्ययन अध्यापन में लगे रहते हैं आपकी इच्छा रहती है कि हर शहरों–गाँवों में शिविरों के माध्यम से बच्चों में भी धर्म रूचि बनें इसी लक्ष्य को रखकर इस चौबीसठाणा कृति को मुनिश्री द्वारा संशोधन कर चन्द्रकापी हाउस आगरा द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है हम मुनि के श्री के प्रकाशक एवं दान दाताओं के आभारी हैं। जिन्होंने ज्ञान यज्ञ में आहुति देकर पुण्योपार्जन किया।

संयोजक

वास्ट जैन फाउण्डेशन 59/2
बिरहाना रोड़ कानपुर (उ०प्र०)

नोटः- चौबीस ठाणा पढ़ने से पहले उसे शुद्धि पत्र से शुद्ध कर लें।

शुद्धि पत्र-चौबीस ठाणा

अशुद्ध		शुद्ध
पृ० ५	ऊपर से तीसरी, तेरहवीं पंक्ति	
	४ निदा बंध	४ निदान बंध
	अव्रत १२	अव्रत १२=
पृ० ७	ऊपर से इक्कीसवीं पंक्ति के बाद जोड़ना है	
	९ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४ धर्म १
पृ० १३	ऊपर से सत्तरहवीं पंक्ति	
	दो इन्द्रिय	तीन इन्द्रिय
पृ० १७	ऊपर से पाँचवीं पंक्ति	
	१५ योग	१ योग
पृ० २३	ऊपर से पन्द्रहवीं पंक्ति	
	१ आहारक	२ आहारक
पृ० ३१	ऊपर से आठवीं, नववीं पंक्ति	
	३ ज्ञान, १ संयम	४ ज्ञान, ३ संयम
पृ. ५८	ऊपर से बाईसवीं पंक्ति, ध्यान में १ शु० जोड़ना है	
पृ० ६८	ऊपर से पाँचवीं पंक्ति	
	आहारक बिना	आहारक द्विक बिना
पृ. ७७	ऊपर से ग्यारहवीं पंक्ति	
	केवलदर्शन बिना	केवल दर्शन

१ गति (४)

१ नरकगति, २ तिर्यग्गति, ३ मनुष्यगति ४ देवगति,।

Scanned by CamScanner

ऊँ नमःसिद्धेभ्यः

चौबीस ठाणा चर्चा

गाथा

गइ–इंदिये च काये, जोये–वेये–कषाय णाणे य।
संजम–दंसण–लेस्सा, भविया–संमत्त–सण्णि–आहारे।।
गुण–जीवा–पज्जत्ती, पाणा–सण्णा–य–मग्गणा ओय।
उवओगोविय कमसो, वीसं तु परूवणा भणिया।।
झाणावि य पच्चावि य, जाइ य कुलकोडि–संजुया सव्वे।
गह्णाति जेण भणिया, कमेण चउवीस ठाणाणि।।

चौबीस ठाणा (स्थानों) के नाम

१ गति	१३ संज्ञित्त्व
२ इन्द्रिय	१४ आहारक
३ काय	१५ गुणस्थान
४ योग	१६ जीवसमास
५ वेद	१७ पर्याप्तिं
६ कषाय	१८ प्राण
७ ज्ञान	१९ संज्ञा
८ संयम	२० उपयोग
९ दर्शन	२१ ध्यान
१० लेश्या	२२ आस्रव
११ भव्यत्व	२३ जाति
१२ सम्यक्त्व	२४ कुल

चौबीस ठाणा (स्थानों) के उत्तर भेद

१ गति (४)

१ नरकगति, २ तिर्यग्गति, ३ मनुष्यगति ४ देवगति,।

Scanned by CamScanner

२-इन्द्रिय {५}

१ एक इन्द्रिय, २ दो इन्द्रिय, ३ तीन इन्द्रिय,
४ चार इन्द्रिय, ५ पाँच इन्द्रिय

३-काय {६}

१ पृथ्वीकाय, २ जलकाय, ३ अग्निकाय, ४ वायुकाय,
५ वनस्पतिकाय, ६ त्रसकाय।

४-योग {१५}

मनोयोग ४- १ सत्य–मनोयोग, २ असत्य–मनोयोग,
३ उभय–मनोयोग,४ अनुभय–मनोयोग।

वचनयोग ४- १ सत्य–वचनयोग, २ असत्य–वचनयोग,
३ उभय–वचनयोग, ४ अनुभय–वचनयोग।

काययोग ७- १. औदारिक–काययोग,
२ औदारिक–मिश्रकाययोग, ३.वैक्रियक काययोग
४ वैक्रियक–मिश्रकाययोग ५ .आहारक काययोग,
६. आहारक मिश्रकाययोग, ७ कार्मण–काययोग।

५ वेद {३}

१ .स्त्री–वेद, २. पुरूष–वेद, ३. नपुसंक–वेद।

६-कषाय {२५}

अनन्तानुबंधी ४- १. क्रोध, २. मान, ३. माया, ४. लोभ।
अप्रत्याख्यान ४- १. क्रोध, २. मान, ३. माया, ४. लोभ।
प्रत्याख्यान ४- १. क्रोध, २. मान, ३ माया, ४.लोभ।
संज्वलन ४- १. क्रोध, २.मान, ३. माया, ४ लोभ।
अकषाय ६– १. हास्य, २. रति, ३. अरति, ४शोक,
५.भय, ६.जुगुप्सा, ७.स्त्रीवेद, ८. पुरूषवेद, ६ नपुंसकवेद।

७-ज्ञान {८}

१. कुमतिज्ञान, २. कुश्रुतज्ञान, ३. कुअवधिज्ञान,
४ सुमतिज्ञान, ५. सुश्रुतज्ञान, ६. सुअवधिज्ञान,
७ मनःपर्ययज्ञान, ८ केवलज्ञान।

८-संयम {७}

१. असंयम, २. संयमासंयम, ३. सामायिक,
४. छेदोपस्थापना, ५. परिहारविशुद्धि, ६. सूक्ष्मसाम्पराय,
७. यथाख्यात।

९-दर्शन {४}

१. चक्षुदर्शन, २. अचक्षुदर्शन, ३. अवधिदर्शन,
४.केवलदर्शन।

१०-लेश्या {६}

१. कृष्ण–लेश्या, २. नील लेश्या, ३. कापोत लेश्या,
४. पीतलेश्या, ५. पद्मलेश्या, ६. शुक्ललेश्या।

११-भव्य {२}.

१. भव्यत्व, २. अभव्यत्व।

१२-सम्यक्त्व {६}

१. मिथ्यात्व, २. सासादन, ३. मिश्र, ४. औपशमिक,
५. वेदक, ६ क्षायिक।

१३-संज्ञित्व {२}

१. संज्ञित्व, २. असंज्ञित्व।

१४-आहारक {२}

१. आहारक, २. अनाहारक।

Scanned by CamScanner

१५-गुणस्थान {१४}

१ मिथ्यात्व, २. सासादन, ३. मिश्र, ४. अविरत,
५. देशव्रत, ६. प्रमत्त, ७. अप्रमत्त, ८ अपूर्वकरण,
९.अनिवृत्तिकरण,१०. सूक्ष्मसाम्पराय, ११. उपशांतमोह,
१२. क्षीणमोह, १३. सयोगकेवली, १४. अयोगकेवली।

१६-जीवसमास {१६}

२ पृथ्वीकाय सूक्ष्म, बादर २ जलकाय सूक्ष्म, बादर
२ अग्निकाय सूक्ष्म, बादर २ वायुकाय सूक्ष्म, बादर
२ नित्यनिगोद सूक्ष्म,बादर २ इतरनिगोद सूक्ष्म, बादर
१ सप्रतिष्ठित प्रत्येक १ अप्रतिष्ठित प्रत्येक
१ दो इन्द्रिय जीव बादर १ तीन इन्द्रिय जीव बादर
१ चार इन्द्रिय जीव बादर १ असैनी ५ इन्द्रिय जीव बादर
१ सैनी–पंचेन्द्रिय जीव बादर।

१७-पर्याप्ति {६}

१. आहार, २. शरीर, ३. इन्द्रिय, ४.श्वांसोच्छ्वास,
५. भाषा, ६. मन।

१८-प्राण {१०}

५. इन्द्रिय–प्राण, १. मनोबल–प्राण, १. वचनबल–प्राण,
१ कायबल–प्राण, १ श्वासोच्छ्वास–प्राण, १. आयु–प्राण।

१९ संज्ञा {४}

१. आहार संज्ञा, २. भय संज्ञा, ३. मैथुन संज्ञा,
४. परिग्रह संज्ञा।

२०-उपयोग {१२}

८ ज्ञानोपयोग, ४ दर्शनपयोग।

२१-ध्यान {१६}

आर्तध्यान ४– १. इष्ट वियोगज, २. अनिष्टसंयोगज,
३. पीड़ा चिन्तन, ४. निदाबुंध।

रौद्रध्यान ४- १. हिंसानन्द, २ मृषानन्द,
३ चौर्यानन्द, ४ परिग्रहानन्द।

धर्मध्यान ४- १. आज्ञाविचय, २. अपायविचय,
३.विपाकविचय, ४. संस्थानविचय।

शुक्लध्यान ४-१. पृथक्त्ववितर्क, २. एकत्ववितर्क,
३.सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति, ४. व्युपरतक्रियानिर्वृत्ति।

२२ - आस्रव {५७}

मिथ्यात्व ५–१. एकान्त–मिथ्यात्व, २. विनय–मिथ्यात्व
३. विपरीत–मिथ्यात्व, ४. संशय–मिथ्यात्व,
५, अज्ञान–मिथ्यात्व अव्रत १२–
६ षट्काय रक्षा नहीं, ५ इन्द्रिय वश नहीं,
१ मन वश नहीं,

कषाय २५ पूर्वोक्त, योग १५ पूर्वोक्त।

२३-जाति {८४ लाख}

७ लाख पृथ्वीकाय, ७ लाख जलकाय,
७ लाख अग्निकाय, ७ लाख वायुकाय,
७ लाख नित्य–निगोद, ७ लाख इतर–निगोद,
१० लाख वनस्पतिकाय, २ लाख दो इन्द्रिय,
२ लाख तीन इन्द्रिय, २ लाख चार इन्द्रिय,
४ लाख पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च, ४ लाख नारक,
४ लाख देव , १४ लाख मनुष्य।

Scanned by CamScanner

२४-कुल १६६।। लाख कोटि

२२ लाख कोटि पृथ्वीकाय, ७ लाख जलकाय,
३ लाख अग्निकाय, ७ लाख वायुकाय,
२८ लाख वनस्पतिकाय, ७ लाख दो इन्द्रिय,
८ लाख तीन इन्द्रिय, ६ लाख चार इन्द्रिय
१२।। लाख जलचर, १२ लाख नभचर,
२६ लाख देव, १६ लाख थलचर,
२५ लाख नारक,
१४ लाख मनुष्य।

योग–१६६।। लाख करोड़

नोट– योनियों वा कुलों का विशद वर्णन गोम्मटसार जीवकाण्ड गाथा ८६ वा ११३ में देखा जावे।

नरकगति में २४ स्थान

१ गति	नरक
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
११ योग	मन ४, वच ४, वैक्रियक २,कार्मण १
१ वेद	नपुंसक
२३ कषाय	स्त्री–पुरूष–वेद बिना
६ ज्ञान	सुज्ञान ३, कुज्ञान ३
१ संयम	असंयम
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
२ भव्यत्व	भव्यत्व,अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
४ गुणस्थान	१, २, ३, ४, पर्यन्त
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय सैनी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
५१ आस्रव	स्त्री १, पुं० १, औ० २, आ० २ बिना
४ लक्ष जाति	नरक सम्बन्धी
२५ ल० को० कुल	नरक सम्बन्धी

Scanned by CamScanner

तिर्यग्गति में २४ स्थान

१ गति	तिर्यञ्च
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
११ योग	मन ४, वच ४, औदा २–कार्मण १
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
६ ज्ञान	सुज्ञान ३, कुज्ञान ३
२ संयम	असंयम, देशसंयम
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व,अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	संज्ञित्व,असंज्ञित्व
२ आहारक	आहारक,अनाहारक
५ गुणस्थान	१, २, ३, ४, ५,
१६ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	कुज्ञान ३, सुज्ञान ३, दर्शन ३
११ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य ३
५३ आस्रव	आहा० २, वैक्रि० २, बिना
६२ लक्ष जाति	तिर्यञ्च एकेन्द्री से पंचेन्द्रीपर्यन्त
१३४।। ल० को० कुल	तिर्यञ्च एकेन्द्री से पंचेन्द्रीपर्यन्त

मनुष्यगति में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१३ योग	वैक्रियक द्विक बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
१४ गुणस्थान	सब
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्री सैनी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१२ उपयोग	सब
१६ ध्यान	सब
५५ आस्रव	वैक्रियक द्विक बिना
१४ लक्ष जाति	मनुष्य सम्बन्धी
१४ ल० को० कुल	मनुष्य सम्बन्धी

Scanned by CamScanner

देवगति में २४ स्थान

१ गति	देव
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१ काय	त्रस
११ योग	मन. ४, वच. ४, वैक्रि० २ कार्मण १
२ वेद	स्त्री–वेद–पुरूष–वेद
२४ कषाय	नपुंसक–वेद बिना
६ ज्ञान	कुज्ञान ३, सुज्ञान ३
१ संयम	असंयम
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	पी० प० शु० पर्याप्त अपेक्षा
६ लेश्या	सब अपर्याप्त अपेक्षा
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
४ गुणस्थान	१, २, ३, ४, पर्यन्त
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्री सैनी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	कुज्ञान ३, सुज्ञान ३, दर्शन ३
१० ध्यान	आर्त. ४, रौद्र. ४, धर्म्य. २
५२ आस्रव	औदा. २, आहा. २, १ नपुंसकबिना
४ लक्ष जाति	देव सम्बन्धी
२६ल० को० कुल	देव सम्बन्धी

एकेन्द्रिय {५ स्थावरों} में २४ स्थान

१ गति	तिर्यञ्च
१ इन्द्रिय	एक – इन्द्रिय
५ काय	त्रस बिना
३ योग	औ० , औ० मिश्र, कार्मण
१ वेद	नपुंसक
२३ कषाय	स्त्रीवेद, पुरूषवेद बिना
२ ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
१ संयम	असंयम
१ दर्शन	अचक्षुर्दर्शन
३ लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
१ संज्ञित्व	असंज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
१ गुणस्थान	मिथ्यात्व
१४ जीवसमास	एकेन्द्री–सम्बन्धी
४ पर्याप्ति	भाषा, मन बिना
४ प्राण	स्पर्शन, काय, आयु, स्वास,
४ संज्ञा	सब
३ उपयोग	कुज्ञान २, अचक्षुद० १
८ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४,
३८ आस्रव	मि० ५, अवि० ७, क० २३, यो० ३,
५२ लक्ष जाति	एकेन्द्री सम्बन्धी
६७ ल० को० कुल	एकेन्द्री सम्बन्धी

Scanned by CamScanner

दो-इन्द्रिय में २४ स्थान

१ गति	तिर्यञ्च
१ इन्द्रिय	दो इन्द्रिय
१ काय	त्रस
४ योग	औ०२, अनु०वचन, कार्मण
१ वेद	नपुंसक
२३ कषाय	स्त्रीवेद, पुरूषवेद बिना
१ संयम	असंयम
२ ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
१ दर्शन	अचक्षुदर्शन
३ लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
१ सैनी	असंज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
१ गुणस्थान	मिथ्यात्व
१ जीवसमास	दो इन्द्रिय
५ पर्याप्ति	मन बिना
६ प्राण	इन्द्रिय२,काय,वचन,श्वास,आयु
४ संज्ञा	सब
३ उपयोग	२ कुज्ञान १ अचक्षुदर्शन
८ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
४० आस्रव	मि० ५, अ० ८, क० २३, यो० ४
२ लक्ष जाति	दो इन्द्रिय सम्बन्धी
७ ल० को० कुल	दो इन्द्रिय सम्बन्धी

तीन इन्द्रिय में २४ स्थान

१ गति	तिर्यञ्च
१ इन्द्रिय	तीन इन्द्रिय
१ काय	त्रस
४ योग	औ० २, अनु० वचन, कार्मण
१ वेद	नपुंसक
२३ कषाय	स्त्रीवेद, पुरूषवेद बिना
१ संयम	असंयम
२ ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
१ दर्शन	अचक्षुर्दर्शन
३ लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
१ सैनी (संज्ञित्व)	असंज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
१ गुणस्थान	मिथ्यात्व
१ जीवसमास	तीनइन्द्रिय
५ पर्याप्ति	मन बिना
७ प्राण	इन्द्रिय३,काय१,वचन१,श्वास१,आयु १
४ संज्ञा	सब
३ उपयोग	२. कुज्ञान,१.अचक्षुदर्शन
८ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
४१ आस्रव	मि० ५, अ० ६, क० २३, यो० ४
२ लक्ष जाति	तीन इन्द्रिय सम्बन्धी
८ ल० को० कुल	तीन इन्द्रिय सम्बन्धी

Scanned by CamScanner

चार इन्द्रिय में २४ स्थान

१ गति	तिर्यञ्च
१ इन्द्रिय	चौ इन्द्रिय
१ काय	त्रस
४ योग	औ० २, अनु० वचन, कार्मण
१ वेद	नपुंसक
२३ कषाय	स्त्रीवेद, पुरूषवेद बिना
१ संयम	असंयम
२ ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
२ दर्शन	चक्षुर्दर्शन, अचक्षुर्दर्शन
३ लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
१ सैनी	असंज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
१ गुणस्थान	मिथ्यात्व
१ जीवसमास	चौ–इन्द्रिय
५ पर्याप्ति	मन बिना
८ प्राण	इन्द्रिय४,काय१,वचन१,श्वास१,आयु१
४ संज्ञा	सब
४ उपयोग	ज्ञान २, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
४२ आस्रव	मि० ५, अ० १०, क० २३, यो० ४
२ लक्ष जाति	चार इन्द्रिय सम्बन्धी
६ ल० को० कुल	चार इन्द्रिय सम्बन्धी

पंचेन्द्रिय में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
२ सैनी (संज्ञित्व)	सब
२ आहारक	सब
१४ गुणस्थान	सब
२ जीवसमास	सैनी, असैनी–पंचेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१२ उपयोग	सब
१६ ध्यान	सब
५७ आस्रव	सब
२६ लक्ष जाति	पंचेन्द्रिय
१०८।। ल० को० कुल	पंचेन्द्रिय

Scanned by CamScanner

त्रसकाय में २४ स्थान

४ गति	सब
४ इन्द्रिय	एकेन्द्रिय जाति बिना
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	स्त्री, पुरूष, नपुंसक
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
२ सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
१४ गुणस्थान	सब
५ जीवसमास	त्रस सम्बन्धी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१२ उपयोग	ज्ञान ८, दर्शन ४,
१६ ध्यान	सब
५७ आस्रव	सब
३२ लक्ष जाति	३२ लाख
१३२।। ल० को० कुल	त्रसों के सभी

सत्य व अनुभय-मन-वचन योग में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पंचेन्द्री
१ काय	त्रस
~~१५~~ योग	स्वकीय नोट–अनुभय वचन योग
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
१ सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व,
१ आहारक	आहारक
१३ गुणस्थान	अयोग बिना
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्री सैनी
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१२ उपयोग	सब
१५ ध्यान	व्युपरतक्रियानि० बिना
४३ आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० २५, योग १ स्वकीय
२६ लक्ष जाति	पञ्चेन्द्रिय सर्व स्वकीय
१०८।। ल० को० कुल	पञ्चेन्द्रिय सर्व स्वकीय

१. नोटः- अनुभय वचन योग में यह विशेषता है। कि यह विग्रहगतिपुण्य में भी पाया जाता है।

Scanned by CamScanner

असत्य व उभय-मन-वचन योग में २४स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पंञ्चेन्द्री
१ काय	त्रस
१ योग	स्वकीय
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
७ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
७ संयम	सब
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
१ सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञी (संज्ञित्व)
१ आहारक	आहारक
१२ गुणस्थान	सयोग, अयोग बिना
१ जीवसमास	सैनी, पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१० उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन ३
१४ ध्यान	अन्तके २, शुक्ल बिना
४३ आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० २५,योग १
२६ लक्ष जाति	पञ्चेन्द्रिय सब
१०८।। ल० को० कुल	पञ्चेन्द्रिय सब

औदारिक काययोग में २४ स्थान

२ गति	तिर्यञ्च, मनुष्य
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१ योग	औदारिक
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
२ सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१३ गुणस्थान	अयोग बिना
१६ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१२ उपयोग	सब
१५ ध्यान	व्युपरतिक्रियानि० बिना
४३ आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० २५, योग १
७६ लक्ष जाति	तिर्यञ्च, मनुष्य
१४८।। ल० को० कुल	तिर्यञ्च, मनुष्य

Scanned by CamScanner

औदारिकमिश्रकाययोग में २४ स्थान

२ गति	तिर्यञ्च, मनुष्य
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१ योग	स्व(औदारिक मिश्र)
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
६ ज्ञान	विभंग, मनःपर्यय बिना
२ संयम	असंयम, यथाख्यात
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	द्रव्य कापोत, भाव ६
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
४ सम्यक्त्व	उपशम, मिश्र बिना
२ सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
४ गुणस्थान	१, २, ४, १३,
१६ जीवसमास	सब
३ पर्याप्ति	मन,भाषा,श्वास बिना
७ प्राण	मन, वच, श्वास बिना
४ संज्ञा	सब
१० उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ४
१० ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य १, शुक्ल १
४३ आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० २५, योग १
७६ लक्ष जाति	तिर्यञ्च, मनुष्य
१४८।। ल० को० कुल	तिर्यञ्च, मनुष्य

वैक्रियक काययोग में २४ स्थान

२ गति	देव, नरक
१ इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१ योग	वैक्रियक काययोग
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
६ ज्ञान	सुज्ञान ३, कुज्ञान ३
१ संयम	असंयम
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
१ सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
४ गुणस्थान	१, २, ३, ४,
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्री
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
१० ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य० २
४३ आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० २५, योग १
८ लक्ष जाति	देव, नारकी
५१ल० को० कुल	देव, नारकी

Scanned by CamScanner

वैक्रियकमिश्रकाययोग में २४ स्थान

२ गति	देव, नरक
१ इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१ योग	वैक्रियक मिश्र०
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
५ ज्ञान	सुज्ञान आदि के ३, कुज्ञान आदि २
१ संयम	असंयम
३ दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
६ लेश्या	द्रव्य कापोत, भाव ६
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
५ सम्यक्त्व	मिश्र बिना
१ सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व
२ आहारक	आहारक,अनाहारक
३ गुणस्थान	१, २, ४,
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्री
३ पर्याप्ति	मन,वच,श्वास बिना
७ प्राण	मन,वच,श्वास बिना
४ संज्ञा	सब
८ उपयोग	ज्ञान ५, दर्शन ३
६ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य० १
४३ आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० २५, योग १
८ लक्ष जाति	देव, नारकी
५१ल० को० कुल	देव, नारकी

आहारक वा आहारकमिश्रकाययोग में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१ काय	त्रस
१ योग	स्व स्व योग
१ वेद	पुरूष
११ कषाय	संज्व० ४, हास्य ६, वेद १
३ ज्ञान	मति, श्रुति, अवधि
२ संयम	सामायिक, छेदोपस्थापना
३ दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
२ सम्यक्त्व	क्षायिक, वेदक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	आहारक,अनाहारक
१ गुणस्थान	प्रमत्त ६ वाँ
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्री
६/३ पर्याप्ति	सब
१०/७ प्राण	स्वकीय
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	सुज्ञान ३, दर्शन ३
७ ध्यान	आर्त ३ धर्म्य० ४
१२ आस्रव	कषा० ११, योग १ स्व स्व
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

Scanned by CamScanner

कार्मणकाययोग में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१ योग	स्व {कार्मणकाय योग}
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
६ ज्ञान	कुअवधि, मनःपर्यय बिना
२ संयम	असंयम, यथाख्यात
४ दर्शन	सब
१ लेश्या	द्रव्य शुक्ल, भाव ६
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
५ सम्यक्त्व	मिश्र बिना
२ संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
१ आहारक	अनाहारक
४ गुणस्थान	१, २, ४, १३
१६ जीवसमास	सब
० पर्याप्ति	०
७ प्राण	मन,वच,श्वास बिना
४ संज्ञा	सब
१० उपयोग	ज्ञान ६ दर्शन ४
११ ध्यान	आर्त ४ रौद्र ४, धर्म्य० २, शुक्ल १
४३ आस्रव	मि० ५ अ० १२ क० २५ योग १
८४ लक्ष जाति	सब
१६६।। ल० को० कुल	सब

भाव-स्त्रीवेद में २४ स्थान

३ गति	देव, मनुष्य, तिर्यञ्च
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१३ योग	आहारक द्विक बिना
१ वेद	स्त्रीवेद
२३ कषाय	पुरूष, नपुंसक बिना
६ ज्ञान	सुज्ञान ३, कुज्ञान ३
४ संयम	अ०,दे०,सामा०,छेदोपस्थापना
३ दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
२ सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
६ गुणस्थान	आदि के ६
२ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्री, अ० पञ्चेन्द्री
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
१३ ध्यान	अन्त के ३ बिना
५३ आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० २३, योग १३
२२ लक्ष जाति	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव
८३।। ल० को० कुल	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव

Scanned by CamScanner

भाव-पुरूष वेद में २४ स्थान

३ गति	देव, मनुष्य, तिर्यञ्च
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
१ वेद	पुरूष
२३ कषाय	स्त्री, नपुंसक बिना
७ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
५ संयम	सूक्ष्म सा०, यथा० बिना
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
२ सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
६ गुणस्थान	आदि के ६
२ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्री, असैनी पञ्चेन्द्री
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१० उपयोग	केवल ज्ञान० द० २ बिना
१३ ध्यान	अन्त के ३ बिना
५५ आस्रव	स्त्री, नपुंसक बिना
२२ लक्ष जाति	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव
८३।। ल० को० कुल	तिर्यञ्च, मनुष्य, देव

भाव-नपुंसक वेद में २४ स्थान

३ गति	नरक, पशु, मनुष्य
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१३ योग	आहारक २ बिना
१ वेद	नपुंसक
२३ कषाय	स्त्री, पुरूष वेद बिना
६ ज्ञान	मनःपर्यय, केवलज्ञान बिना
४ संयम	अ०, दे०, सामा०, छेदोपस्थापना
३ दर्शन	केवल बिना
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२ अहारक	आहारक, अनाहारक
६ गुणस्थान	आदि के ६ 1 से 5 इन्द्रियतक
१६ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
१३ ध्यान	अन्त के तीन बिना
५३ आस्रव	आहारक द्विक,स्त्रीवेद,पुरूषवेद बिना
८० लक्ष जाति	नारकी, पशु, मनुष्य
१७३।। ल० को० कुल	नारकी, पशु, मनुष्य

Scanned by CamScanner

अनन्तानुबन्धिचतुष्क में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१३ योग	आहारक २ बिना
३ वेद	सब
१० कषाय	हास्यादि ६, स्व स्व कषाय १
३ ज्ञान	कुज्ञान ३
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
२ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सासादन
२ सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
२ गुणस्थान	मिथ्यात्व, सासादन
१६ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
५ उपयोग	कुज्ञान ३, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
४० आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० १०, योग १३
८४ लक्ष जाति	सब
१६६।। ल० को० कुल	सब

अप्रत्याख्यान चतुष्क में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१३ योग	आहारक २ बिना
३ वेद	सब
१० कषाय	हास्यादि ६, स्व स्व कषाय १
३ ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि
१ संयम	असंयम
३ दर्शन	केवल बिना
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
४ सम्यक्त्व	मिश्र, उप, क्षायिक, वेदक
१ सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व
२ आहारक	आहारक,अनाहारक
२ गुणस्थान	३, ४
१ जीवसमास	संज्ञी पञ्चेन्द्री
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
१० ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य २
३५ आस्रव	अ० १२, क० १०, योग १३
२६ लक्ष जाति	नारकी ४,पशु ४,मनुष्य१४, ४ देव
१०८।। ल० को० कुल	नारकी, पशु, मनुष्य, देव

Scanned by CamScanner

प्रत्याख्यान ४ कषाय में २४ स्थान

२ गति	मनुष्य, पशु
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
६ योग	मन ४, वचन ४, औ० १
३ वेद	सब
१० कषाय	हास्यादि ६, स्व १
३ ज्ञान	मति, श्रुत, अवधि
१ संयम	संयमासंयम
३ दर्शन	चक्षु, अचक्षु, अवधि
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
३ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक, वेदक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक,
१ गुणस्थान	देशव्रत
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
११ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य ३
३० आस्रव	अ० ११, क० १०, योग ६
१८ लक्ष जाति	पशु, मनुष्य,
५७।। ल० को० कुल	पशु, मनुष्य,

संज्वलन-त्रिक में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य,
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
११ योग	मन ४,वचन ४,औ०१,आहा २
३ वेद	सब
१० कषाय	हास्यादि ६, स्व स्व १
४ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
३ संयम	सामा०, छेदो, परिहार०
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
३ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक, वेदक
१ सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
४ गुणस्थान	६, ७, ८, ९
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
७ उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
८ ध्यान	आर्त ३, धर्म ४, शुक्ल १
२१ आस्रव	योग ११, कषाय १०
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

Scanned by CamScanner

संज्वलन-लोभ में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य,
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१ काय	त्रस
११ योग	मन ४,वचन ४,औ० १,आहा २
३/० वेद	सब या वेदरहित
१० कषाय	हास्यादि ६, सूक्ष्मलोभ १
४ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
४ संयम	सामा०, छेदो, परिहार० सूक्ष्म०
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	शुभ
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
३ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक, वेदक
१ सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व,
१ आहारक	आहारक,
५ गुणस्थान	६ से १० तक
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
७ उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
८ ध्यान	आर्त ३, धर्म ४, शुक्ल १
२१ आस्रव	योग ११, कषाय १०
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

हास्यादि षट् में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२० कषाय	क्रोधादि १६, वेद ३, हास्यादि स्व १
७ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
५ संयम	सूक्ष्म, यथाख्यात बिना
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
८ गुणस्थान	आठ पर्यन्त
१६ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१० उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन ३
१३ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य ४ शुक्ल १
५२ आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० २०, योग १५
८४ लक्ष जाति	सब
१६६।। ल० को० कुल	सब

Scanned by CamScanner

कुमति-कुश्रुत ज्ञान में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१३ योग	आहारक २ बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
१ ज्ञान	स्व, स्व
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
२ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सासादन
२ संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
२ गुणस्थान	मिथ्यात्व, सासादन
१६ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
३ उपयोग	ज्ञान स्व स्व १, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४,
५५ आस्रव	आहारक द्विक बिना
८४ लक्ष जाति	सब
१६६।। ल० को० कुल	सब

कुअवधिज्ञान में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१० योग	म ४, व ४, औ० १, वै० १
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
३ ज्ञान	कुअवधि पर्यन्त
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
२ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सासादन
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
२ गुणस्थान	मिथ्यात्व, सासादन
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
५ उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४,
५२ आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० २५, यो० १०
२६ लक्ष जाति	पञ्चेन्द्री
१०८।। ल० को० कुल	पञ्चेन्द्री

Scanned by CamScanner

मति--श्रुतज्ञान में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२१ कषाय	अनंतानुबन्धी ४ बिना
१ ज्ञान	स्व (मति, श्रुत)
७ संयम	सब
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
३ सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
६ गुणस्थान	४ से १२ तक
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
३ उपयोग	ज्ञान १, दर्शन २
१४ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, ध० ४, शु०२
४८ आस्रव	अ० १२, क० २१, योग १५
२६ लक्ष जाति	पञ्चेन्द्री
१०८ ।। ल० को० कुल	पञ्चेन्द्री

अवधिज्ञान में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२१ कषाय	अनंतानुबंधी ४ बिना
३ ज्ञान	अवधिज्ञान तक
७ संयम	सब
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
३ सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१ सैनी	संज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
६ गुणस्थान	४ से १२ तक
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
१४ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, ध० ४, शु०२
४८ आस्रव	अ० १२, क० २१, योग १५
२६ लक्ष जाति	पञ्चेन्द्री
१०८ ।। ल० को० कुल	पञ्चेन्द्री

Scanned by CamScanner

मनःपर्ययज्ञान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
६ योग	मन ४, वचन ४, औ० १
१ वेद	पुरूष
११ कषाय	संज्व० ४, हास्य ६, पुरू० १
१ ज्ञान	मनःपर्यय
४ संयम	सा०, छे०, सू०, यथा०
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
३ सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
७ गुणस्थान	६ से १२ तक
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
४ उपयोग	ज्ञान १, दर्शन ३
६ ध्यान	आर्त ३, धर्म्य ४, शु० २
२० आस्रव	योग ६, कषाय ११
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

केवलज्ञान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
७ योग	मन २, वचन २, औ० २, कार्मण १
० वेद	०
० कषाय	०
१ ज्ञान	केवलज्ञान
१ संयम	यथाख्यात
१ दर्शन	केवलदर्शन
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
१ सम्यक्त्व	क्षायिक
० संज्ञित्व	० ० ०
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
२ गुणस्थान	सयोग, अयोग
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
४ प्राण	मन० वच० श्वास० आयु
० संज्ञा	० ० ०
२ उपयोग	केवलज्ञान १, केवलदर्शन १
२ ध्यान	अन्त के शुक्ल २
७ आस्रव	योग (ऊपर अंकित)
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

Scanned by CamScanner

सामायिक, छेदोपस्थापना संयम में २४स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
११ योग	मन ४, वचन ४, औ० १ आहारक २
३ वेद	सब
१३ कषाय	संज्वलन ४, हास्यादि ६
४ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
१ संयम	स्व स्व (सामा०, छेदो०)
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
३ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक, वेदक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक,
४ गुणस्थान	६ से ६ तक
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
७ उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
८ ध्यान	आर्त ३, धर्म्य ४ शुक्ल १
२४ आस्रव	कषाय १३, योग ११
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

परिहारविशुद्धि संयम में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
६ योग	मन ४, वचन ४, औ० १
१ वेद	पुरूष
११ कषाय	संज्वलन ४, हास्यादि ६, पुरूष १
३ ज्ञान	मत्यादि
१ संयम	परिहारविशुद्धि
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
२ सम्यक्त्व	क्षायिक, वेदक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक,
२ गुणस्थान	प्रमत्त, अप्रमत्त
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
७ ध्यान	आर्त ३, धर्म्य ४
२० आस्रव	कषाय ११, योग ६
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

Scanned by CamScanner

सूक्ष्मसाम्परायसंयम में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
६ योग	मन ४, वचन ४, औ० १
० वेद	०
१ कषाय	संज्वलन लोभ
४ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
१ संयम	सूक्ष्मसाम्पराय
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
२ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक
१ सैनी (संज्ञित्व)	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक,
१ गुणस्थान	१० वाँ
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
१ संज्ञा	परिग्रह
७ उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१ ध्यान	प्रथम शुक्ल
१० आस्रव	संज्वलन क० १,योग ६
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

यथाख्यात संयम में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
११ योग	मन ४, वचन ४, औ० २, का०१
० वेद	० ० ०
० कषाय	० ० ०
५ ज्ञान	मत्यादि यथायोग्य
१ संयम	यथाख्यात
४ दर्शन	सब
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
२ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
४ गुणस्थान	११ से १४ तक
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
० संज्ञा	० ० ०
६ उपयोग	ज्ञान ५, दर्शन ४
४ ध्यान	शुक्ल ४
११ आस्रव	योग ११
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

Scanned by CamScanner

संयमासंयम में २४ स्थान

२ गति	तिर्यञ्च, मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
६ योग	मन ४, वचन ४, औ० १
३ वेद	सब
१७ कषाय	प्रत्या० ४, सं० ४, नो० ६
३ ज्ञान	मति, श्रुति, अवधि
१ संयम	संयमासंयम
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
३ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक, वेदक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक,
१ गुणस्थान	देशव्रत
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
११ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म ३
३७ आस्रव	अ० ११, क० १७, योग ६
१८ लक्ष जाति	पशु, मनुष्य
५७।। ल० को० कुल	पशु, मनुष्य

असंयम में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१३ योग	आहारक २ बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
६ ज्ञान	कुज्ञान ३, सुज्ञान ३
१ संयम	असंयम
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
४ गुणस्थान	१ से ४ तक
१६ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
१० ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य २
५५ आस्रव	मि०५, अ० १२, क० २५, योग १३
८४ लक्ष जाति	सब
१६६।। ल० को० कुल	सब

Scanned by CamScanner

चक्षुर्दर्शन में २४ स्थान

४ गति	सब
२ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री, चौइन्द्री
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
७ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
७ संयम	सब
१ दर्शन	चक्षुर्दर्शन
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
१२ गुणस्थान	१२ पर्यन्त
३ जीवसमास	चौ इ० १, सै०, असै० पंचे० २
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
८ उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन १
१४ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य ४, शु० २
५७ आस्रव	सब
२८ लक्ष जाति	चौइन्द्री, पञ्चेन्द्री
११७।। ल० को० कुल	चौइन्द्री, पञ्चेन्द्री

अचक्षुर्दर्शन में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
७ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
७ संयम	सब
१ दर्शन	अचक्षुर्दर्शन
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२ आहारक	आहारक ,अनाहारक
१२ गुणस्थान	१२ पर्यन्त
१६ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
८ उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन १
१४ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य ४ शु० २
५७ आस्रव	सब
८४लक्ष जाति	सब
१६६।। ल० को० कुल	सब

Scanned by CamScanner

अवधिदर्शन में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२१ कषाय	अनंतानुबन्धी ४ बिना
४ ज्ञान	सुज्ञान
७ संयम	सब
१ दर्शन	अवधिदर्शन
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
३ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक, वेदक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व,
२ आहारक	आहारक ,अनाहारक
६ गुणस्थान	४ से १२ तक
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्री
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
५ उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन १
१४ ध्यान	अन्त के २ शुक्ल बिना
४८ आस्रव	मि० ५, क० ४, बिना
२६ लक्ष जाति	न०, ति० सै० पं., मनु०, देव
१०८।। ल० को० कुल	न०, ति० सै० पं., मनु०, देव

केवलदर्शन में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
७ योग	म० २, व० २, औ० २, का० १
० वेद	० ० ०
० कषाय	० ० ०
१ ज्ञान	केवलज्ञान
१ संयम	यथाख्यात
१ दर्शन	केवलदर्शन
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	क्षायिक
० संज्ञित्व	० ०
२ आहारक	आहारक ,अनाहारक
२ गुणस्थान	१३ से १४ तक
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्री
६ पर्याप्ति	सब
४ प्राण	काय १, वचन १, श्वास १, आयु १
० संज्ञा	० ० ०
२ उपयोग	केवलज्ञान १, केवलदर्शन १
२ ध्यान	अन्तके २ शुक्ल
७ आस्रव	७ योग
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

Scanned by CamScanner

कृष्ण, नील, कापोत लेश्या में २४ स्थान

३ गति	देव बिना (पर्याप्त अपेक्षा)
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१३ योग	आहारक २ बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
६ ज्ञान	सुज्ञान ३, कुज्ञान ३
१ संयम	असंयम
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	स्व (कृष्ण,नील,कापोत)
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२ आहारक	आहारक ,अनाहारक
४ गुणस्थान	१ से ४ तक
१६ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ३
१० ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य २
५५ आस्रव	आहारक २ बिना
८० लक्ष जाति	देव बिना
१७३।। ल० को० कुल	देव बिना

पीत, पद्म लेश्या में २४ स्थान

३ गति	पशु, मनुष्य, देव
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
७ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
५ संयम	सूक्ष्मसा०, यथाख्यात बिना
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
१ लेश्या	स्व (पीत, पद्म)
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
२/१ संज्ञित्व	पीत में संज्ञित्व, असंज्ञित्व २ पद्म में सै० १
२ आहारक	आहारक ,अनाहारक
७ गुणस्थान	७ पर्यन्त
२/१ जीवसमास	पीत में सै०, अ० २, पद्म में सै० १
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१० उपयोग	ज्ञान ७, दर्शन ३
१२ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य ४
५७ आस्रव	सब
२२ लक्ष जाति	पशु, मनुष्य, देव
८३।। ल० को० कुल	पशु, मनुष्य, देव

Scanned by CamScanner

शुक्ललेश्या में २४ स्थान

३ गति	पशु, मनुष्य, देव
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
१ लेश्या	शुक्ल
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	आहारक ,अनाहारक
१३ गुणस्थान	१३ पर्यन्त
१ जीवसमास	सैनी, पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१२ उपयोग	सब
१५ ध्यान	अन्तका शुक्ल० १ बिना
५७ आस्रव	सब
२२ लक्ष जाति	पशु, मनुष्य, देव
८३।। ल० को० कुल	पशु, मनुष्य, देव

भव्यत्व में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	सब
२ आहारक	सब
१४ गुणस्थान	सब
१६ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१२ उपयोग	सब
१६ ध्यान	सब
५७ आस्रव	सब
८४ लक्ष जाति	सब
१६६।। ल० को० कुल	सब

Scanned by CamScanner

अभव्यत्व में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१३ योग	आहारक २ बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
३ ज्ञान	कुज्ञान ३
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	अभव्यत्व
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
२ संज्ञित्व	सब
२ आहारक	सब
१ गुणस्थान	मिथ्यात्व
१६ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
५ उपयोग	कुज्ञान ३, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
५५ आस्रव	आहारक २ बिना
८४ लक्ष जाति	सब
१६६।। ल० को० कुल	सब

मिथ्यात्व सम्यक्त्व में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१३ योग	आहारक द्विक बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
३ ज्ञान	कुज्ञान
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
२ संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
१ गुणस्थान	मिथ्यात्व
१६ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
५ उपयोग	कुज्ञान ३, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
५५ आस्रव	आहारक द्विक बिना
८४ लक्ष जाति	सब
१६६।। ल० को० कुल	सब

Scanned by CamScanner

सासादन सम्यक्त्व में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१३ योग	आहारक २ बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
३ ज्ञान	कुज्ञान ३
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु २
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	सासादन
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
१ गुणस्थान	सासादन
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
५ उपयोग	कुज्ञान ३, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४,
५० आस्रव	मि० ५, आ० २ बिना
२६ लक्ष जाति	नारकी, पशु, मनुष्य, देव,
१०८।। ल० को० कुल	नारकी, पशु, मनुष्य, देव,

मिश्र-सम्यक्त्व में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१० योग	म० ४, व० ४, औ० १, वै० १
३ वेद	सब
२१ कषाय	अनंतानुबन्धी ४ बिना
३ ज्ञान	मिश्रज्ञान
१ संयम	असंयम
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	मिश्र सम्यक्त्व
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१ गुणस्थान	मिश्र
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
५ उपयोग	मिश्रज्ञान ३, दर्शन ३
९ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य १
४३ आस्रव	अ० १२, क० २१, यो० १०
२६ लक्ष जाति	नारकी, पशु, मनुष्य, देव,
१०८।। ल० को० कुल	नारकी, पशु, मनुष्य, देव,

Scanned by CamScanner

उपशम सम्यक्त्व में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१२ योग	आहारक २,औदा० मि०१ बिना
३ वेद	सब
२१ कषाय	अनंतानुबन्धी बिना
४ ज्ञान	मत्यादि ४
६ संयम	परिहारविशुद्धि बिना
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	उपशमसम्यक्त्व
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
८ गुणस्थान	चौथे से ११ पर्यन्त
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
७ उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१३ ध्यान	आ० ४, रौ० ४, ध० ४ शुक्ल 1
४५ आस्रव	अ० १२, क० २१, यो० १२
२६ लक्ष जाति	नारकी, पशु, मनुष्य, देव,
१०८ ।। ल० को० कुल	नारकी, पशु, मनुष्य, देव,

क्षयोपशम सम्यक्त्व में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२१ कषाय	अनंतानुबन्धी बिना
४ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
५ संयम	सूक्ष्म०, यथा०, बिना
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	क्षयोपशम
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
४ गुणस्थान	४, ५, ६, ७
१ जीवसमास	पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
७ उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१२ ध्यान	आ० ४, रौ० ४, ध० ४
४८ आस्रव	अ० १२, क० २१, यो० १५
२६ लक्ष जाति	नारकी, पशु, मनुष्य, देव,
१०८ ।। ल० को० कुल	नारकी, पशु, मनुष्य, देव,

Scanned by CamScanner

क्षायिक सम्यक्त्व में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२१ कषाय	अनन्तानुबन्धी बिना
५ ज्ञान	३ कुज्ञान बिना
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
११ गुणस्थान	४/१४ पर्यन्त
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	सुज्ञान ५, दर्शन ४
१६ ध्यान	सब
४८ आस्रव	अ० १२, क० २१, यो० १५
२६ लक्ष जाति	ना०, पं० पशु, मनु०, देव,
१०८।। ल० को० कुल	ना०, पं० पशु, मनु०, देव,

संज्ञी में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रस
१५ योग	सब
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
७ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
७ संयम	सब
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
१२ गुणस्थान	१२ पर्यन्त
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१० उपयोग	सुज्ञान ७, दर्शन ३
१४ ध्यान	शुक्ल २ बिना
५७ आस्रव	सब
२६ लक्ष जाति	ना०, पं०, पशु,मनु०, देव,
१०८।। ल० को० कुल	ना०, पं०, पशु, मनु०, देव,

Scanned by CamScanner

असंज्ञी में २४ स्थान

१ गति	तिर्यञ्च
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
४ योग	औ० २, का० १, अनु० वच० १
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
२ ज्ञान	कुमति, कुश्रुत
१ संयम	असंयम
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
४ लेश्या	कृष्ण, नील, कापोत, पीत
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
१ संज्ञित्व	असंज्ञित्व
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
१ गुणस्थान	मिथ्यात्व
१८ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय बिना
५ पर्याप्ति	मन बिना
६ प्राण	मन बिना
४ संज्ञा	सब
४ उपयोग	कुज्ञान २, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४
४५ आस्रव	मि० ५, अ० ११, क० २५, यो० ४
६२ लक्ष जाति	असैनी तिर्यञ्च
१३४।। ल० को० कुल	असैनी तिर्यञ्च

आहारक में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१४ योग	कार्मण बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
८ ज्ञान	सब
७ संयम	सब
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
६ सम्यक्त्व	सब
२ संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१३ गुणस्थान	१३ पर्यन्त
१६ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
१२ उपयोग	सब
१५ ध्यान	अन्त का शुक्ल बिना
५६ आस्रव	कार्मण बिना
८४ लक्ष जाति	सब
१६६।। ल० को० कुल	सब

Scanned by CamScanner

अनाहारक में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१ योग	कार्मण
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
६ ज्ञान	विभंग, मनःपर्यय बिना
२ संयम	असंयम, यथाख्यात
४ दर्शन	सब
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
५ सम्यक्त्व	मिश्र बिना
२ संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
१ आहारक	अनाहारक
५ गुणस्थान	१, २, ४, १३, १४
१६ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
७ प्राण	मन, वचन, श्वास बिना
४ संज्ञा	सब
१० उपयोग	ज्ञान ६, दर्शन ४
११ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य १, शु० २
४३ आस्रव	मि० ५, अ० १२, क० २५, यो० १
८४ लक्ष जाति	सब
१६६।। ल० को० कुल	सब

मिथ्यात्व-गुणस्थान में २४ स्थान

४ गति	सब
५ इन्द्रिय	सब
६ काय	सब
१३ योग	आहारक २ बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
३ ज्ञान	कुज्ञान ३
१ संयम	असंयम,
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
२ भव्यत्व	भव्यत्व, अभव्यत्व
१ सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सम्यक्त्व
२ संज्ञित्व	संज्ञित्व, असंज्ञित्व
२ आहारक	आहारक अनाहारक
१ गुणस्थान	मिथ्यात्व
१६ जीवसमास	सब
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
५ उपयोग	कुज्ञान ३, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४,
५५ आस्रव	आहारक २ बिना
८४ लक्ष जाति	सब
१६६।। ल० को० कुल	सब

Scanned by CamScanner

सासादन गुणस्थान में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय
१ काय	त्रसकाय
१३ योग	आहारक २ बिना
३ वेद	सब
२५ कषाय	सब
३ ज्ञान	कुज्ञान ३
१ संयम	असंयम,
२ दर्शन	चक्षु, अचक्षु
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
१ सम्यक्त्व	सासादन
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व,
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
१ गुणस्थान	सासादन
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
५ उपयोग	कुज्ञान ३, दर्शन २
८ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४,
५० आस्रव	अ० १२, क० २५, योग १३
२६ लक्ष जाति	पञ्चेन्द्री
१०८।। ल० को० कुल	पञ्चेन्द्री

मिश्र-गुणस्थान में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१ काय	त्रस
१० योग	मन ४, वचन ४, १ औदा०, १ वैक्रियक
३ वेद	सब
२१ कषाय	अनन्तानुबन्धी बिना
३ ज्ञान	मिश्रज्ञान
१ संयम	असंयम,
२ दर्शन	अवधि ,केवल बिना
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
१ सम्यक्त्व	मिश्रसम्यक्त्व
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व,
१ आहारक	आहारक,
१ गुणस्थान	मिश्र
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
५ उपयोग	मिश्रज्ञान ३, दर्शन २
६ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य १
४३ आस्रव	अ० १२, क० २१, योग १०
२६ लक्ष जाति	पञ्चेन्द्री
१०८।। ल० को० कुल	पञ्चेन्द्री

Scanned by CamScanner

अविरत-गुणस्थान में २४ स्थान

४ गति	सब
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१ काय	त्रस
१३ योग	आहारक बिना
३ वेद	सब
२१ कषाय	अनन्तानुबन्धी ४ बिना
३ ज्ञान	सुज्ञान ३
१ संयम	असंयम,
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
६ लेश्या	सब
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
३ सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व,
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
१ गुणस्थान	अविरति
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
१० ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य २
४६ आस्रव	अ० १२, क० २१, योग १३
२६ लक्ष जाति	पञ्चेन्द्री
१०८।। ल० को० कुल	पञ्चेन्द्री

देशव्रत-गुणस्थान में २४ स्थान

२ गति	पशु, मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१ काय	त्रस
६ योग	म० ४, व० ४, औ० १
३ वेद	सब
१७ कषाय	अनं० ४, अप्र० ४, बिना
३ ज्ञान	सुज्ञान ३
१ संयम	संयमासंयम,
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
३ सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व,
१ आहारक	आहारक,
१ गुणस्थान	देशव्रत
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
६ उपयोग	ज्ञान ३, दर्शन ३
११ ध्यान	आर्त ४, रौद्र ४, धर्म्य ३
३७ आस्रव	अ० ११, क० १७, योग ६
१८ लक्ष जाति	पशु ४, मनुष्य १४
५७।। ल० को० कुल	पशु ४३।। मनुष्य १४

Scanned by CamScanner

प्रमत्त-गुणस्थान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१ काय	त्रस
११ योग	म० ४, व० ४, औ० १, आहा० २
३ वेद	द्रव्य पुरूष, भाववेद ३
१३ कषाय	संज्वलन ४, हास्यादि ६
४ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
३ संयम	सामा०, छेदो०, परि०
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
३ सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व,
१ आहारक	आहारक,
१ गुणस्थान	प्रमत्त
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
४ संज्ञा	सब
७ उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
७ ध्यान	आर्त ३, धर्म्य ४
२४ आस्रव	कषाय १३, योग ११
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

अप्रमत्त-गुणस्थान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१ काय	त्रस
६ योग	म० ४, व० ४, औ० १
३ वेद	द्रव्य पुरूष, भाववेद ३
१३ कषाय	संज्वलन ४, हास्यादि ६
४ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
३ संयम	सामा०, छेदो०, परि०
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
३ लेश्या	पीत, पद्म, शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
३ सम्यक्त्व	उपशम, वेदक, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व,
१ आहारक	आहारक,
१ गुणस्थान	अप्रमत्त
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
३ संज्ञा	भय, मैथुन, परि०
७ उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
४ ध्यान	धर्म्य ४
२२ आस्रव	कषाय १३, योग ६
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

Scanned by CamScanner

अपूर्वकरण-गुणस्थान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१ काय	त्रस
६ योग	म० ४, व० ४, औ० १
३ वेद	द्रव्य पुरूष, भाववेद ३
१३ कषाय	संज्वलन ४, हास्यादि ६
४ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
२ संयम	सामा० १, छेदो० १
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
२ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व,
१ आहारक	आहारक,
१ गुणस्थान	अपूर्वकरण
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
३ संज्ञा	आहार बिना
७ उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१ ध्यान	पृथक्त्ववितर्कविचार
२२ आस्रव	कषाय १३, योग ६
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

अनिवृत्तिकरण-गुणस्थान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१ काय	त्रस
६ योग	म० ४, व० ४, औ० १
३ वेद	द्रव्य पुरूष, भावभेद ३
७ कषाय	संज्वलन ४, वेद ३
४ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
२ संयम	सामा०१, छेदो०, १
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
२ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व,
१ आहारक	आहारक,
१ गुणस्थान	अनिवृत्तिकरण
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
२ संज्ञा	मैथुन, परिग्रह
७ उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१ ध्यान	पृथक्त्ववितर्कविचार
१६ आस्रव	कषाय ७, योग ६
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

Scanned by CamScanner

सूक्ष्मसाम्पराय-गुणस्थान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१ काय	त्रस
६ योग	म० ४, व० ४, औ० १
० वेद	० ० ०
१ कषाय	संज्वलन (सूक्ष्म) लोभ
४ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
१ संयम	सूक्ष्मसाम्पराय
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
२ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१ गुणस्थान	सूक्ष्मसाम्पराय
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
१ संज्ञा	परिग्रह (सूक्ष्मलोभ)
७ उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१ ध्यान	पृथक्त्ववितर्कविचार
१० आस्रव	कषाय १, योग ६
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ल० को० कुल	मनुष्य

उपशांतकषाय-गुणस्थान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१ काय	त्रस
६ योग	म० ४, व० ४, औ० १
० वेद	० ० ०
० कषाय	० उदयाभावापेक्षया
४ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
१ संयम	यथाख्यात
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व,
२ सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व,
१ आहारक	आहारक,
१ गुणस्थान	उपशान्तकषाय
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
० संज्ञा	० कार्याभावत्वात्
७ उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१ ध्यान	पृथक्त्ववितर्कविचार
६ आस्रव	योग ६
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

Scanned by CamScanner

क्षीणकषाय-गुणस्थान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१ काय	त्रस
६ योग	म० ४, व० ४, औ० १
० वेद	० ० ०
० कषाय	० ० ०
४ ज्ञान	केवलज्ञान बिना
१ संयम	यथाख्यात
३ दर्शन	केवलदर्शन बिना
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	क्षायिक
१ संज्ञित्व	संज्ञित्व
१ आहारक	आहारक
१ गुणस्थान	क्षीणकषाय
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय
६ पर्याप्ति	सब
१० प्राण	सब
० संज्ञा	० ० ०
७ उपयोग	ज्ञान ४, दर्शन ३
१ ध्यान	एकत्ववितर्कवीचार
६ आस्रव	योग ६
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

सयोगकेवली-गुणस्थान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१ काय	त्रस
७ योग	सत्यमन, वच० २, अनुभय मन, वच० २ औदारिक २, कार्मण १
० वेद	० ० ०
० कषाय	० ० ०
१ ज्ञान	केवलज्ञान
१ संयम	यथाख्यात
१ दर्शन	केवलदर्शन बिना
१ लेश्या	शुक्ल
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	क्षायिक
० संज्ञित्व	० ० ०
२ आहारक	आहारक, अनाहारक
१ गुणस्थान	सयोगकेवली
१ जीवसमास	सेनी पञ्चेन्द्रिय (अपेक्षा द्रव्यमन)
६ पर्याप्ति	सब
४ प्राण	वच, काय, श्वास, आयु
० संज्ञा	० ० ०
२ उपयोग	केवलज्ञान , केवलदर्शन
१ ध्यान	सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति
७ आस्रव	योग ७
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

Scanned by CamScanner

अयोगकेवली-गुणस्थान में २४ स्थान

१ गति	मनुष्य
१ इन्द्रिय	पञ्चेन्द्री
१ काय	त्रस
० योग	० ० ०
० वेद	० ० ०
० कषाय	० ० ०
१ ज्ञान	केवलज्ञान
१ संयम	यथाख्यात
१ दर्शन	केवलदर्शन
० लेश्या	० ० ०
१ भव्यत्व	भव्यत्व
१ सम्यक्त्व	क्षायिक
० संज्ञित्व	० ० ०
१ आहारक	अनाहारक
१ गुणस्थान	अयोगकेवली
१ जीवसमास	सैनी पञ्चेन्द्रिय {द्रव्य–मन अपेक्षा}
६ पर्याप्ति	सब
१ प्राण	आयु
० संज्ञा	० ० ०
२ उपयोग	केवलज्ञान , केवलदर्शन
१ ध्यान	व्युपरतक्रिया–निवृत्ति
० आस्रव	० ० ०
१४ लक्ष जाति	मनुष्य
१४ ल० को० कुल	मनुष्य

चौबीस ठाणा

दोहा –देव धर्म–गुरू ग्रन्थकों,वन्दोंमन–वच–काय
गुणठाणा पर यंत्र की, रचना कहों बनाय।।

सवैया इकतीसा

गति चार , इन्द्री पाँच, काय षट् योग पन्द्रै,
वेद तीन ,चौ कषाय ,ज्ञान आठ सारे हैं।
संयम सात, दृग चार ,लेश्या षट् भव्य दोय,
सैनी दोय, सम्यक् छै,दोय ही अहारे हैं ।।
गुण चौदा , जीव चौदा प्रजा षट् ,प्राण दस,
प्रत्यय सत्तावन,उपयोग भेद बारे हैं।
ध्यान सोलै ,संज्ञा चार ,जाति लाख चउरासी,
आधघाटी कुल दौसे, लाख कोड़ि धारे हैं।।

चौपाई

पहिलेतें चतुलग गति चार, पंचम में नर पशू विचार।
छट्ठेतें चौदम लग कही, मानुष गति जानों सही।।
इन्द्री पाँचों हैं मिथ्यात्व दूजेतैं चौदम लग जात।
इक पंचेन्द्री जिनवर कही, इमि इन्द्रिय वर्णन वरणई।।
पहिले गुण षट्काय जु लसें दूजेतैं चौदम त्रस बसें।
पहिले दूजे तेरह योग ,हारक द्विक बिन जान नियोग।।
तीजे में दस इमि गिन लाय, मन वच अष्ट औदारिक काय।
वैक्रीयक मिल सब दस भये, चौथे त्रयोदस पहिले कहे।।
पंचम में मन वच वसु जान, और औदारिक मिल नव ठान।
प्रमत्त में एकादस योग, हारक द्विक युत जान नियोग।।
सप्तमतें बारम लग जान, नव पंचमवत् जान सुजान।
तेरम जोग सप्त निरधार , अनुभय सत्य, वचन मन चार।।

Scanned by CamScanner

औदारिक औदारिकमिश्र, कार्मण मिला सप्त जु विस्त्र।।
चौदम जोग भये सब क्षीण , ये जोगन की विधि परवीण।
वेद प्रथमतें नव लग तीन, आगे वेद न जान प्रवीन।
अब कषाय को वर्णन करों, गुण – ठाणा भिन भिन उच्चरों।।

चौबीस ठाणा

दोहा

देव शास्त्र–गुरू एवं धर्म को मन–वचन–काय पूर्वक नमस्कार करके गुण ठाणा यंत्र की रचना कर रहा हूँ।

(सवैया इकतीसा)

गति चार, इन्द्रियाँ पाँच, काय छ :, योग पन्द्रह, वेद तीन, कषाय चार तथा ज्ञान आठ होते हैं।

संयम सात, दर्शन चार, लेश्या छ :, भव्य दो, सैनी दो, सम्यक्त्व छ : तथा आहारक के दो भेद होते हैं।

गुणस्थान चौदह, जीव समास चौदह, पर्याप्तियाँ छः, प्राण दस, आस्रव (प्रत्यय) तथा उपयोग दो भेद वाला हैं।

ध्यान सोलह, संज्ञा चार, जाति चौरासी लाख, आधा कम दो सौ अर्थात् एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़ कुल धारण करते हैं।

गुणस्थान में मार्गणायें

(चौपाई)

पहले से चौथे गुणस्थान तक चारों गति के जीव, पाँचवें गुणस्थान तक मनुष्य और तिर्यञ्च तथा छटवें से चौदहवें गुणस्थान तक केवल मनुष्य गति ही जानना चाहिए।

मिथ्यात्व गुणस्थान में एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तथा दूसरे से चौदहवें गुणस्थान तक केवल एक पंचेन्द्रिय जीव ही जाते हैं। इस प्रकार जिनेन्द्र भगवान ने इन्द्रिय मार्गणा का वर्णन किया।

पहले गुणस्थान में छहों काय के जीव, तथा दूसरे से चौदहवें गुणस्थान में केवल त्रस जीव ही रहते हैं।

पहले और दूसरे गुणस्थान में आहारक द्विक के बिना तेरह योगों का नियोग, तीसरे गुणस्थान में चार मनोयोग, चार वचन योग, औदारिक काय योग तथा वैक्रियक काय योग मिलने से दस योग हैं।

चौथे गुणस्थान में आहारक द्विक के बिना पूर्व में कहे गए तेरह, पाँचवें में मन, वचन के आठ और औदारिक काय मिलाकर नौ योग। छटवें प्रमत्त गुणस्थान में आहारक द्विक सहित ग्यारह योगों का नियोग हैं।

हे सज्जन पुरूष ! सातवें से बारहवें तक पाँचवें गुणस्थान की तरह नौ योग जानना चाहिए। तेरहवें गुणस्थान में अनुभय वचन योग, अनुभय मनोयोग,

Scanned by CamScanner

सत्य वचन योग, सत्य मनोयोग, औदारिक काय योग, औदारिक मिश्र काय योग तथा कार्माण काय योग मिलाकर ये सात योग होते हैं। चौदहवें गुणस्थान में सभी योग क्षीण हो जाते हैं। अर्थात् अयोगी अवस्था है। ये योगों की कुशल विधि बतायी गई।

पहले से नववें गुणस्थान तक तीनों वेद रहते हैं तथा हे प्रवीण आगे गुणस्थानों में वेद नहीं पाये जाते हैं। अब भिन्न–भिन्न गुणस्थानों में कषाय का वर्णन करते हैं।

छप्पय

पहिले दूजे सर्व, मिश्र इकबीस भनीजे।
चौथे हूँ इकवीस , चौकडी; प्रथम न लीजे।।
अप्रत्याख्यानी बिना, देश – संयम में सतरा।
प्रत्याख्यानी बिना तेरें षट् सत वसु इतरा।।
नौवें गुण सब सात हैं संज्वलन त्रय वेद भन।
दसवें सूक्षम लोभ इक, आगे हीन कषाय गन।।
प्रथम दुतीय कुज्ञान, तीन तीजे सु मिश्र भन।
चौथे तीन सुज्ञान , पाँचवें में भी इमि गन।।
षट्तें द्वादस तई, ज्ञान केवल बिन चारों।
तेरम–चौदम गुणस्थान, केवल एक धारों।।
इहि विधि गुण परिज्ञान को, कथन कहो जगदीशने।
अब संयम रचना कहुँ जिमि सूत्तर भाषी जिने।।
पहिलेतें चतु लगै, असंयम ही इक जानों।
पंचम संयम देश, छठें सप्तम इमि जानों।।
सामायिक, छेदोपस्थाप, परिहार– विशुद्धी।

अष्टम– नव गुण दोय, नाहिं परिहार विशुद्धी।।
सांपराय– सूक्ष्म दसें, ग्यारमतें जु अयोग तक।
इक यथाख्यात ही जानिये, ये संयम सुखकर अधिक।।
पहिले दूजे दोय , चक्षु– अचक्षु भनीजे ।
त्रयते बारम तईं, अवधियुत तीन गनीजे ।।
केवल तेरम चौद और, षट् लेश्या चतु लग ।
पंचम–षष्टम सप्त, तीन शुभ लेश्या हर अघ।।
पुनि अष्टमतें सयोग तक, एक शुकल लेश्या कही।
गुण चौदहें सब नाशिके, जाय सिद्ध पदवी लही ।।
पहिले भव्य अभव्य, दुतियतें भवि चौदम तक।
त्रयगुण के जो नाम, तहाँ वो ही सम्यक् इक।।
चतु पन षट् सत मांहि, क्षाय उपशम अरू वेदक।
बसुतें ग्यारम तईं दोय, उपशम अरू क्षायिक ।।
शेषन क्षायिक ही कही, सैनी–असैनी मिथ्यात में ।
गुण दूजेतें चौदम तईं, इक सैनी ही सुखपात में।।

(छप्पय)

पहले, दूसरे गुणस्थान में सभी (२५), तीसरे, चौथे में प्रथम चौकड़ी के बिना इक्कीस कषाय लेना चाहिए।

अप्रत्याख्यान के बिना देश संयम में सत्रह, प्रत्याख्यान के बिना छटवें, सातवें, आठवें गुणस्थान में तेरह कषाय होती हैं।

नववें गुणस्थान में चार संज्वलन और तीन वेद ये सात, दसवें में एक सूक्ष्म लोभ, तथा आगे गुणस्थानों में कषाय नहीं पायी जाती है।

Scanned by CamScanner

पहले दूसरे गुणस्थान में तीन कुज्ञान (कुमति –कुश्रुत–कुअवधि), तीसरे में तीन मिश्र ज्ञान, चौथे में तीन सुज्ञान तथा पाँचवें में भी यही जानना चाहिए। छटवें से बारहवें तक केवलज्ञान के बिना चार सुज्ञान तथा तेरहवें, चौदहवें, गुणस्थान में एक केवलज्ञान पाया जाता है।

इस प्रकार गुणस्थानों में ज्ञान का कथन जगदीश्वर ने किया अब संयम रचना कहूँगा जो सूत्र भाषी जिनेन्द्र भगवान ने कही हैं।

पहले से चौथे गुणस्थान में एक असंयम ही जानना चाहिए। पाँचवें में देश संयम, छटवें, सातवें में सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहार विशुद्धि आठवें–नववें में परिहार विशुद्धि के बिना दो संयम, दसवें में सूक्ष्मसाम्पराय, तथा ग्यारहवें गुणस्थान से अयोग केवली तक एक यथाख्यात संयन ही जानना चाहिये। ये संयम अधिक अधिक सुख को देने वाले हैं।

पहले दूसरे गुणस्थान में चक्षु–अचक्षु दर्शन, तीसरे से बारहवें गुणस्थान तक अवधिज्ञान सहित तीन दर्शन तथा तेरहवें, चौदहवें, गुणस्थान में एक केवल दर्शन ही पाया जाता है।

पहले से चौथे गुणस्थान तक छहों लेश्या, पाँचवें, छटवें, सातवें में पापों को हरने वाली तीन शुभ लेश्यायें पुनः आठवें से सयोग केवली तक शुक्ल लेश्या कही है। तथा चौदहवें गुणस्थान में सभी लेश्याओं

का नाश करके सिद्ध पद को प्राप्त कर लेते हैं।

पहले गुणस्थान में भव्य और अभव्य दोनों, दूसरे से चौदहवें में एक भव्य जीव ही रहते हैं। तीन गुणस्थानों के जो नाम हैं उस उस गुणस्थान में वही सम्यक्त्व रहते हैं।

चौथे–पाँचवें, छटवें, सातवें गुणस्थान में क्षायिक उपशम और वेदक। आठवें से ग्यारहवें तक उपशम, क्षायिक दो, तथा शेष गुणस्थानों में एक क्षायिक सम्यक्त्व ही पाया जाता हैं।

मिथ्यात्व गुणस्थान में सैनी–असैनी तथा दूसरे से चौदहवें गुणस्थान में एक सैनी जीव ही सुख पाते हैं।

सवैया तेईसा

पहिले दूजे हार–अनहारक, तीजे हारक चौथे दोय।
पंचमते बारम लग हारक, तेरमहार – अनहारक होय।।
चौदम एक अनहार गनीजे, गुनठाना चौदह इमि लोय।
पहिले जीवसमास सयल हैं, शेषन में त्रस और न कोय ।।
पर्यापति चौदम लग षट् हो, प्राण बारवें लग दस जान।
तेरम वच–तन श्वास–आयुचतु, चौदम एक आयु पहिचान।
संज्ञा कहियत षट् लग चारों, सप्त अष्ट त्रय हार न ठान।
नवमें मैथुन परिग्रह दोनों, दसवें परिग्रह आगे हान।।

Scanned by CamScanner

(सवैया तेइसा)

पहले दूसरे गुणस्थान में आहारक–अनाहारक, तीसरे में आहारक, चौथे में आहारक–अनाहारक दोनों, पाँचवें से बारहवें आहारक, तेरहवें में दोनों तथा चौदहवें में अनाहारक ही होते हैं।

पहले गुणस्थान में सभी जीवसमास, शेष गुणस्थानों में एक त्रस जीवसमास होता हैं।

पहले से चौदहवें गुणस्थान में छहों पर्याप्तियाँ तथा पहले से बारहवें गुणस्थान तक दस प्राण होते हैं।

तेरहवें गुणस्थान में वचन–काय–श्वासोच्छवास तथा आयु ये चार, चौदहवें गुणस्थान में एक आयु प्राण जानना चाहिए।

पहले से छटवें गुणस्थान तक चारों संज्ञायें, सातवें–आठवें में आहार के बिना तीन संज्ञायें, नववें में मैथुन परिग्रह, दसवें में परिग्रह तथा इस गुणस्थान से आगे कोई भी संज्ञा नहीं पायी जाती है।

छप्पय

पहिले दूजे दर्श, दोय कुज्ञान तीन हैं।
मिश्र मांहि द्वय दर्श, ज्ञान पुनि मिश्र तीन हैं।।
चतु पन षट् विज्ञान , तीन शुभरूप बखानों ।
षट् तें द्वादश तई, सप्त मनपर्यय जानों।।
तेरम चौदम दोय हैं केवल दर्श – ज्ञान युत।
अब कहता हूँ ध्यान, सुनों तुम भक्ति भावयुत।।

पहिले दूजे अष्ट, आर्त्त – रूद्दर के जोई ।
मिश्र मांहि नव जान, धर्म का एक मिलोई ।।
पुनि वृष के दुय भेद, मिलें जो चतु गुण ठानों ।
पंचम त्रय वृष मिलें, इकादस सब पहिचानों ।।
षट् आरत त्रय धर्म चऊ,सत चउ ग्यारम लग शुकल।
बारम तेरम पुनि चौदमें, कमतें शेष त्रिक शुकल।।
पहिले पचपन कहे, अहारक द्विक बिन जानों।
पंच मिथ्यात जु बिना, दुतिय पच्चास बखानों।।
तीजे मिश्र जु मांहि, तीन चालीस बखानों।
अव्रतगुण जिहिं नाम, तुरिय चालीस छह जानों।।
योग कषाय छ बीस, अव्रत ग्यारह पंचम में ।
चौबीस योग कषाय के, प्रमत्त गिनये सच में ।।
सप्तम अष्टम गुण,– स्थान बाईस जु आस्रव।
नवमें सोलह लये,दसम दस ग्यारह में नव।।
बारमवें नव जान, तेरमें सप्त गनीजे ।
मन वच के दुय दोय, औदारिक युगल सु लीजे ।।
कारमाण मिल सप्त ये, तेरम गुण में जानिये ।
पुनि चौदम में आस्रव नहीं, यह मन – वच उर आनिये।।
चौरासी लख योनि, प्रथम गुण ठाने सारी ।
दूजेतें चौ तईं, लाख छब्बीस विचारी ।।
कुलकोडि प्रथम में जान सब, दूजतें चतुलग चउ।
पंचम नर पशु सकल गन, आगे मानुष जान सउ।।

Scanned by CamScanner

(छप्पय)

पहले दूसरे गुणस्थान में दो दर्शन, तीन ज्ञान। तीसरे मिश्र गुणस्थान में भी दो दर्शन, तीन मिश्र ज्ञान होते हैं।

चौथे और पाँचवें गुणस्थान में तीन दर्शन, तीन सुज्ञान होते हैं ये तीनों शुभ रूप कहे गए हैं। छठवें से बारहवें तक चार ज्ञान, तीन दर्शन जानना चाहिये। तेरहवें गुणस्थान में केवल दर्शन सहित केवल ज्ञान ये दो ही उपयोग होते हैं।

अब आगे जिन शासन के अनुसार ध्यान का वर्णन करते हैं। पहले और दूसरें गुणस्थान में चार आर्त और चार रौद्र ये आठ ध्यान, मिश्र गुणस्थान में एक धर्म ध्यान को मिलाकर नौ ध्यान, चौथें गुणस्थान में चार आर्त और चार रौद्र, दो धर्म ध्यान, पाँचवें गुणस्थान में तीन धर्म ध्यान मिलाने से ग्यारह ध्यान जानना चाहिये।

छठवें में तीन आर्त, चार धर्म ध्यान, सातवें में चार धर्म ध्यान, आठवें से ग्यारह तक एक शुक्लध्यान, फिर बारहवें, तेरहवें और चौदहवें में क्रम से एक–एक शुक्ल ध्यान जानना चाहिये।

पहले गुणस्थान में आहारक द्विक के बिना पचपन आस्रव, दूसरे में पाँच मिथ्यात्व कम करने से पचास आस्रव कहे गये हैं। तीसरे मिश्र गुणस्थान में तैंतालिस आस्रव। चौथे अव्रत गुणस्थान में छयालीस

आस्रव, जानना चाहिये। पाँचवें गुणस्थान में नौ योग, १७ कषाय (ये२६) तथा ग्यारह अविरति ये तैंतीस आस्रव। छठवें गुणस्थान में ११ योग, १३ कषाय ये चौबीस आस्रव। सातवें, आठवें गुणस्थान में नौ योग, तेरह कषाय ये बाईस आस्रव। नौवें में नौ योग सात कषाय ये सोलह। दसवें में नौ योग एक कषाय ये दस आस्रव। ग्यारहवें, बारहवें में नौ योग। तथा तेरवें गुणस्थान में सात योग जानना चाहिये। सत्य मनोयोग, अनुभय मनोयोग, सत्यवचन योग, अनुभयवचनयोग, औदारिक मिश्र और कार्माण मिलाकर ये सात योग तेरहवें गुणस्थान में जानना चाहिये। चौदहवें गुणस्थान में आस्रव नहीं है। ऐसी अयोग अवस्था को मन, वचन से हृदय में लाना चाहिए।

पहले गुणस्थान में सभी चौरासी लाख तथा दूसरे से चौथे तक छब्बीस लाख योनियाँ कहीं गई हैं। पाँचवें में मनुष्य, तिर्यंच की अठारह लाख, छठवें से चौदह तक मनुष्य संबन्धी, चौदह लाख जानना चाहिये।

पहले गुणस्थान में कुलकोड़ियाँ (१६६।।)। दूसरे से चौथे तक चारों गति संबन्धी, (१०८।।)। पाँचवें में मनुष्य और तिर्यंच संबन्धी (५७।।) तथा इसके आगे एक मनुष्य संबन्धी (१४ लाख) ही जानना चाहिए।

Scanned by CamScanner

दोहा

ये सब रचना पर तनीं यामें तू नहिं जीव ।
तेरा दर्शन - ज्ञान गुण, तामें रहो सदीव ।।

(दोहा)

हे आत्मन् 'ये सारी रचना दूसरों के लिए हैं"। इसमें तू नहीं हैं तेरा तो ज्ञान और दर्शन गुण हैं सो सदा उसी में रहना चाहिए।

चौबीस दण्डक

दोहा

वन्दौं वीर सुधीर कों, महावीर गंभीर ।
वर्धमान सन्मति महा, देवदेव अतिवीर।।
गत्यागत्य प्रकाश के, गत्यागत्य व्यतीत ।
अद्भुत अतिगति सुगतिजो, जैनसूर जगदीश ।।
जाकी भक्ति बिना विफल, गये अनन्ते काल ।
अगणित गत्यागति धरी कटो न जग जंजाल ।।
चौबीसों दंडक विषै, धरी अनन्ती देह।
नाहीं लखियो ज्ञान–धन, शुद्ध स्वरूप विदेह।।
जिनवाणी परसादतें, लहिये आतमज्ञान।
दहिये गत्यागति सबैं, गहिये पद निर्वान ।।
चौबीसों दंडकतनी, गत्यागति सुन लेव ।
सुनकर विरकत भाव धरि , चहुँगति पानी देव ।।

चौपाई

पहिलो दंडक नारक तनों, भवनपती दस दंडकभनों।
ज्योतिष व्यन्तर सुरगति वास, थावर पंच महादुखरास।।

विकलत्रय अरू नर तिर्यञ्च, पंचेन्द्रिय धारक परपंच।
ये चौबीसों दंडक कहें, अब सुन लीजे भेद जु लहे।।
नारक की गति आगति दोय, नर तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय होय।
जाय असैनी पहिले लगै, मन बिन हिंसा करम न पगै।।
सरीसर्प दूजे लग जांहि, तीजे लग पक्षी शक नांहि।
सर्प जाय चौथे लग सही, नाहर पंचम आगे नहीं ।।
नारी छट्टे लग ही जाय, नर अरू मच्छ सातवें थाय।
ये तौ नरकतनी गति जान, अब आगति भाषी भगवान
नरक सातवें को जो जीव, पशुगति ही पावे दुखदीव।
और नारकी षष्ठ सदीव, दो गति पावें नर पशु जीव।।
छट्ठे को निकसो जु कदापि, सम्यक्त्वी हौवे निष्पाप।
पंचम को निकसो मुनि होय, चौथे के केवलि हू जोय।।
तृतीय नरक को निकसो जीव, तीर्थंकर हू है जगदीव।
ये नारक की गत्यागत्य, भाषी जिनवाणी में सत्य ।।
तेरह दंडक देव निकाय, तिनके भेद सुनो मन लाय।
नर तिर्यञ्च पंचेन्द्री बिना,औरन के सुरपद नहिं गिना।।
देव मरे गति पंच लहाय, भू जल, तरूवर नर पशु काय।
दूजे सुरग, उपरले देव, थावर है न कहो जिनदेव ।।
सहस्रारते ऊँचे सुरा, मरकर होवें निश्चय नरा ।
नर पशु भोगभूमि के दोय, दूजे सुरग परे नहिं होय ।।
जाँय नहीं यह निश्चय कही, देवनि भोगभूमि नहिं लही ।
कर्मभूमियाँ नर अरू ढोर, इन बिन भोगभूमि नहिं और ।।
जाँय न तांते आगति सोय, गति इनकी देवन की होय
कर्मभूमियाँ तिर्यग्–सत्त, श्रावकव्रत धरि बारम गत्त ।।
सहस्रार ऊपर तिर्यंच, जाँय नहीं ये तजि परपंच ।
अव्रत सम्यक्ती नरमाय, बारमते ऊपर नहिं जाय।।

Scanned by CamScanner

अन्यमती पंचाग्नी साध, भवनत्रिकतें जाय न बाध ।
परिव्राजक दंडी हैं जेह, पंचम परे नांहि उपजेह ।।
परमहंस नामा परमती, सहस्रार ऊपर नहि गती ।
मोक्ष न पावे परमत मांहि, जैन बिना नहि कर्म नशांहि ।
श्रावक आर्य अणुव्रत धार, बहुरि श्राविकागण अविकार ।
अच्युतस्वर्ग परे नहिं जाय, ऐसो भेद कहो जिनराय।।
द्रव्यलिंग धारी जे जती ,नवग्रीवक आगे नहिं गती ।
बाह्ययाभ्यान्तर परिग्रह होय, परतछ लिंग निन्द्य है सोय ।।
पंच पंचोत्तर नव नवोतरा, महामुनी बिन और न धरा ।
केई बार देव जिय भयो , पै केई पद नाहीं लयो ।।
इन्द्र हुवो न शची हू भयो, लोकपाल कबहूं नहिं थयो ।
लौकांतिक हूवा न कदापि , अनुतर मँह पहुँचो न कदापि।।
ये पद धरि अन पद नहिं धरे, अल्पकाल में मुक्तिहिं वरे ।
है विमान सर्वारथ सिद्ध, सबतें ऊँचो अतुल जु रिद्धि ।।
ताके ऊपर है शिवलोक, परे अनन्तानन्त अलोक ।
गति आगति देवन की भनी, अब सुनिलो मानुषगति तनी ।।
चौबीसों दंडक के मांहि मनुष जाय यामें शक नाहिं ।
मुक्ति हु पावे मनुष मुनीश, सकल धरा को है अवनीश ।।
मुनि बिन मोक्ष न पावे और, मनुष बिना नहिं मुनि कौ ठौर
सम्ययग्दृष्टी जे मुनिराय, भवदधि उतरें शिवपुर जाय।।
तहाँ जाय अविनश्वर होय,फिर जग में आवें नहिं कोय ।
रहे सासते आतम मांहि ,आतमराम भये शक नांहि ।।
गति पच्चीस कही नरतनी, आगति पुनि बाईस हि भनी ।
तेजकाय अरू वात जु काय, इन बिन और सवै नर थाय।
गति पच्चीस आगति बाईस , मनुषतनी भाषी जगदीश ।
ता ईश्वरसम आतमरूप, ध्यावे चिदानन्द चिद्रूप।।

तीर्थंकर की आगति दोय, सुर नारकतें आवे सोय ।
फेर न गति धारे जगईश , जाय विराजें जग के शीश ।।
चक्री अर्ध चक्रि वा हली , स्वगलोकतें आवें बली ।
इनकी आगति एक हि कही, अब सुनिये जागति जू सही ।
चक्री की गति तीन बखान ,स्वर्ग नरक अरू मोक्ष सुथान
तप धारे तो सुर शिव जाय, मरे युद्ध में नरक लहाय ।।
आखिर पावे पद निर्वान , पदवीधर ये पुरूष प्रधान ।
बलभद्दर की है जागति, सुरग जाय के है शिवपती ।।
तप धारें ये निश्चय भाय, मुक्तिपात्र सूत्रन में गाय
अर्धचक्रि को एक हि भेद , जाय नरक में लहे जु खेद ।।
समर मांहि यह निश्चय मरे, तद्भव मुक्तिपंथ नहिं धरे ।
आखिर पावे पद निर्वान, पदवीधारक बडे सुजान ।।
इनकी आगति सुरगति जान, गति नरकन की कही बखान।
आखिर पावें पद शिवलोक , पुरूष शलाका शिव के थोक।।
ये पद पाय सु जग के जीव अल्पकाल में हैं जगपीव ।
और हुँ पद कोई ना गहे, कुलकर नारद हूँ नहिं लहे ।।
रूद्र भये ना मदन हुँ भये जिनवर तात मात नहिं थये ।
ये पद पाय रूले नहिं जीव, थोरे दिन में है शिवपीव ।।
इनकी आगति श्रुततें जान, जागति रीति कहूँ जु वखान ।।
कुलकर देवलोक ही जाय, कलह कलंक महादुखदाय ।
जन्मान्तर पावें निर्वान, बड़े पुरूष ये सूत्र प्रमान ।।
तीर्थंकर के पिता प्रसिद्ध स्वर्ग जांय कै होवें सिद्धि ।
माता स्र्वगलोक ही जाय, आखिर शिवसुख वेग लहाय ।।
ये सब रीति मनुज की कही अब सुनि तिर्यग्गति की सही ।
पंचेन्द्री पशु मरण कराय चौबीसों दंडक में जाय ।।
चौबीसों दंडकतें मरे पशू होय तो हानि न परे ।

Scanned by CamScanner

गति आगति वरणी चौबीस, पंचेन्द्री पशु की जगदीश ।।
ता परमेश्वर को पथ गहो, चौबीसों दंडक को दहो ।
विकलत्रय की दस ही गती, दस आगति भाषी जिनपती ।।
थावर पंच विकलत्रय तीन, नर तिर्यञ्च पंचेन्द्री लीन ।
इन ही दस में उपजे आय, इनही तैं विकलत्रय थाय ।।
नारक बिन दंडक है जोय, पृथ्वी पानी तरूवर होय।
तेज वायु मरि नव में जाय, मनुष्य होय नहिं सूत्र कहाय ।।
थावर पंच विकलत्रय ढोर, ये नवगति भाषी मदमोर ।
दसतें आय तेज अरू वाय, होय सही गावें जिनराय ।।
ये चौबीसों दंडक कहें, इनको त्याग परमपद लहे ।
इनमें रूले सो जग को जीव, इनसे तिरे सो त्रिभुवन पीव ।।
जीव ईश में और न भेद, ये कर्मी, वे कर्म उछेद ।
कर्मबंध जौलों जगजंत, नाशत कर्म होय भगवंत।।

दोहाः-

मिथ्या अव्रत जोग अरू, मद परमाद कषाय ।
इन्द्री विषय जु त्यागिये, भ्रमण दूर हो जाये।।
जिन बिन गति बहुतै धरी, भयो नहीं सुलझार।
जिन मारग उर धारिके, लहिये भवदधि पार ।।
जिन भज सब परपंच तज बडी बात है येह ।
पंच महाव्रत धारिकैं, भवजलकों जल देह ।।
अन्तःकरण जु शुद्ध है, जिनधरमी अभिराम ।
भाषा भविजन कारणें, भाषी दौलतराम ।

चौबीस-दण्डक

वीर, सुधीर, महावीर, गम्भीर, वर्धमान, सन्मति, देवाधिदेव, अतिवीर को नमस्कार कर गति–आगति–से रहित आश्चर्यजनक सुगति को प्राप्त करने के लिए जैन सूर जगदीश ने गति आगति पर प्रकाश डाला हैं।

जिसकी भक्ति किए बिना अनन्त काल व्यर्थ गवाँ दिए। असंख्यात गतियों को धारण करने के बाद भी जग का जंजाल नहीं कटा। अर्थात् संसार के बंधन से मुक्त नहीं हो पाये। इन चौबीस स्थानों में अनन्त शरीर धारण किये। पर शुद्ध चैतन्य स्वरूपी देह से रहित करने वाले ज्ञान रूपी धन को आज तक नहीं देखा। अब जिनवाणी की कृपा से आत्मज्ञान को प्राप्त कर गति आगति का नाश करके निर्वाण पद को प्राप्त करिए।

अब चौबीस दण्डक के मध्य गति–आगति सुनिये। इसे सुनकर विरक्ति भाव को धारण कर चारों गतियों से रहित हो जाइए।

(चौपाई)

पहला दण्डक नरक को आदि करके, भवनवासियों के दस,ज्योतिष–व्यन्तर–वैमानिक, पंचस्थावर–विकलत्रय मनुष्य और तिर्यञ्च तथा पाँच इन्द्रियों के महाकष्ट को देने वाले प्रपंच रूप ये चौबीस स्थान कहे गए हैं। अब इनके भेद सुनिये अर्थात् गति आगति का विशेष

Scanned by CamScanner

वर्णन सुनिये।

नारिकियों की गति और आगति दो ही होती हैं अर्थात् पंचेन्द्रिय मनुष्य और तिर्यञ्च ही नरक जाते हैं तथा नरक से आकर भी पंचेन्द्रिय मनुष्य और तिर्यञ्च ही होते हैं।

असैनी पंचेन्द्रिय पहले नरक तक ही जाते हैं। क्योंकि मन के बिना हिंसा कर्म में अधिक प्रवृत्ति नहीं होती हैं। पक्षी तीसरे नरक तक, सर्प चौथे नरक तक, सिंह पाँचवें नरक तक, स्त्री छटवें नरक तक तथा मनुष्य एवं मच्छ सातवें नरक तक जाते हैं।

यह नरक जाने वालों की गतियाँ कहीं, अब नारकियों की आगति जिनेन्द्र भगवान कहते हैं। सातवें नरक से निकलकर दुखकारी तिर्यञ्च गति तथा छटवें नरक से निकले जीव तिर्यञ्च और मनुष्य गति ही पाते हैं। छटवें से निकले सम्यक्त्वी, पाँचवें से निकलकर मुनि, चौथे से निकलकर केवली, तथा तीसरे से निकलकर तीर्थंकर भी हो सकते हैं। ये जिनवाणी में नरक की गति आगति कही है।

देवों के तेरह दण्डक कहे हैं। अब एकाग्रचित होकर सुनो। पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च, मनुष्य के बिना और कोई देव गति को प्राप्त नहीं कर सकता है। तथा देवों की मरने के बाद पृथ्वी, जल, वनस्पत्ति, मनुष्य और तिर्यञ्च यें पाँच गति होती हैं। दूसरे स्वर्ग से ऊपर के देव स्थावर नहीं होते हैं। ऐसा जिनेन्द्र

भगवान ने कहा है। सहस्रार स्वर्ग से ऊपर के देव मरकर निश्चय से मनुष्य ही होते हैं। भोग भूमि के मनुष्य तथा तिर्यञ्च दूसरे स्वर्ग से ऊपर नहीं जाते तथा देव मरकर भोग भूमि को प्राप्त नही होते हैं, उनकी दो ही गति होती हैं, कर्मभूमियाँ मनुष्य–तिर्यञ्चों के अतिरिक्त और कोई भोगभूमि नही जाता इसलिये इनकी अगति दो तथा गति एक देव गति ही होती हैं। कर्म भूमियाँ तिर्यञ्च की सत्ता वाला श्रावक के १२ व्रतों को धारण कर सौलहवें स्वर्ग तक जाता हैं। इसी प्रकार अवरति सम्यग्दृष्टि मनुष्य भी सोलह स्वर्ग से ऊपर नहीं जाते, अन्य मतावताम्बी पंचाग्नि तपस्वी भवनत्रिक से ऊपर नहीं जाते हैं, इसी प्रकार परिव्राजक दण्ड़ी पाँचवें से ऊपर, परमहंसी नामक अन्य मती सहस्रार स्वर्ग के ऊपर उत्पन्न नहीं होते हैं। जैन धर्म को धारण किये बिना कर्म का नाश नहीं हो सकता इसलिये अन्य मतावलम्बी मोक्ष प्राप्त नहीं कर पाते। अणुव्रतों को धारण करने वाले आर्य–श्रावक तथा श्राविका सौलहवें स्वर्ग के ऊपर नहीं जाते ऐसा भेद जिनेन्द्र भगवान ने कहा है। द्रव्यलिंग को धारण करने वाले यतियों की गति नववें ग्रैवेयक के आगे नहीं हैं। जिनके बाह्य आभ्यंतर परिग्रह होता है वह लिङ्ग प्रत्यक्ष निंदनीय है।

पाँच अनुत्तर तथा नौ अनुदिश में महामुनियों के बिना और कोई नहीं जाता। जिसके जीव कई बार

Scanned by CamScanner

देव तो हुआ लेकिन वह उनमें से इन कई पदों को नहीं प्राप्त कर सका। इन्द्र, शचि, लोकपाल, लौकांतिक देव, कभी भी नहीं हुआ और न कभी भी अनुत्तर में पहुँचा अतुल रिद्धि वाले पाँचवें अनुत्तर विमान सर्वार्थसिद्धि भी नहीं गया क्योंकि इन पदों को धारण करने के बाद अन्य पदों को धारण नहीं किये बिना ही अल्प काल में मोक्ष प्राप्त कर लेता है। सर्वार्थसिद्धि के ऊपर शिवलोक और शिव लोक के आगे अनन्तानंत लोकाकाश है। इस प्रकार देवों की गति आगति कही अब आगे मनुष्यों की गति सुनिये।

मनुष्य चौबीसों दण्डकों में जाते हैं मुक्ति भी मनुष्य ही प्राप्त करते है, इसमे कोई संदेह नहीं है।

मुनि के बिना और कोई भी मोक्ष प्राप्त नहीं करता और मनुष्य के बिना कोई मुनि बन नहीं सकता है। जो सम्यग्दृष्टि मुनिराज हैं वह संसार समुद्र से पार होकर शिवपुर को प्राप्त करते हैं। वहाँ जाकर अविनश्वर पद को प्राप्त करके फिर कभी भी संसार में नहीं जाते अपनी आत्मा में लीन होकर आतम राम बन जाते हैं इसमे कोई संदेह नहीं है। इस प्रकार मनुष्य की गति तो पच्चीस होती हैं पर आगति बाईस ही कही गई हैं। अग्निकाय और वायुकाय छोड़कर शेष सभी मनुष्य गति को प्राप्त कर लेते हैं। इस प्रकार मनुष्यों की गति पच्चीस, आगति बाईस जिनेन्द्र भगवान ने कही हैं। ईश्वर के समान चिदानंन्द शिवरूप

आत्म स्वरूप का ध्यान करने से भवसागर से पार हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त और किसी प्रकार शिवपुर को प्राप्त नहीं किया जा सकता। ये तो सामान्य मनुष्य की गति आगति कही। अब पदवी धारी मनुष्यों की सुनिये।

तीर्थंकरों की देव और नरक ये दो ही आगति होती हैं तथा तीर्थंकर दूसरी गति को धारण न करके उसी गति से लोक के शीर्ष पर विराजमान हो जाते हैं। चक्रवर्ती की स्वर्ग, नरक, और मोक्ष ये तीन गति कही गई हैं। तप धारण करते हैं तो स्वर्ग या मोक्ष जाते हैं। और यदि युद्ध में मरते हैं तो नरक गति प्राप्त करते हैं। पर ये सभी पदवी धारी पुरूष मोक्षगामी ही होते हैं। वलभद्रों की स्वर्ग और मोक्ष दो ही गति होती हैं। तप धारण करते हैं तो निश्चय ही मोक्ष जाते हैं। इन मुक्ति पात्रों को सूत्र ग्रंथो में गाया हैं। अर्ध चक्री एक नरक गति में दुख पाते हैं। क्योंकि ये निश्चित रूप से युद्ध भूमि में मरते हैं। इसलिये इस भव में मोक्ष नहीं जाते पर ये पदवीधारी भी बाद में निर्वाण पद को प्राप्त करते लेते हैं। इस पदवीधारी पुरूषों की आगति देव गति जानना चाहिये, पर गति नरक ही कही हैं। लेकिन अन्त में सभी ६३ शलाका पुरूष शिवलोक ही जाते हैं। संसारी जो जीव इन पदों को प्राप्त कर लेते हैं वे अल्पकाल में संसार समुद्र को पार कर लेते है इनके अतिरिक्त और भी

Scanned by CamScanner

कई पद प्राप्त नहीं किये। जैसे कुलकर, नारद, रूद्र, कामदेव तथा तीर्थंकर के माता पिता भी कभी नही बना क्योंकि इन पदों को प्राप्त करने के बाद जीव संसार में नही रूकता और अल्पसमय में ही मोक्ष प्राप्त कर लेता है। इनकी आगति आगम से जान लेना चाहिये। गति यहॉ पर कही जा रही हैं, कुलकर देव लोक ही जाते है। कामदेव और वलभद्र ऊपर जाते हैं। कलह प्रिय नारद और कलंकित रूद्र नरक गति में जाते हैं। लेकिन अवांतर जन्म में मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं। ये सभी श्रेष्ठ पुरूष सूत्रों में प्रमाणित हैं।

तीर्थंकर के पिता स्वर्ग या मोक्ष जाते हैं। माता स्वर्ग जाकर अंत में शीघ्र ही मोक्ष प्राप्त कर लेती है। यह मनुष्यों की आगति कही अब तिर्यंचों की गति सुनिये।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच मरण कर चौबीसों दण्ड़क में जाता है। तथा चौबीसों दण्डकों से मरण कर तिर्यंच होने में कोई बाधा नहीं हैं इस प्रकार जिनेन्द्र भगवान ने पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चों की गति आगति का वर्णन किया। इन चौबीसों दण्डकों का अंत कर परमेश्वर का पद प्राप्त करना चाहिये। विकलत्रयों की दस गति होती हैं और आगति भी जिनेन्द्र भगवान ने दस कही हैं ये पाँच स्थावर, तीन विकलत्रय, मनुष्य और तिर्यञ्च दस में ही उत्पन्न होते हैं। और इन्हीं दस दण्डकों से विकलत्रय में जाते हैं। नारक के बिना शेष दण्डक

पृथ्वी, जल, वनस्पति होते है। अग्नि कायिक, वायुकायिक मरकर मनुष्य के बिना शेष नौ में जाते हैं। ऐसा सूत्र कहा हैं पंच स्थावर, तीन विकलत्रिय और तिर्यंच इनकी नौ ही गतियाँ कही गई हैं। पर दसों स्थानों से आकर तेज, वायुकाय हो सकते हैं।

इस प्रकार ये चौबीस दण्ड कहे जो इनको त्याग देते हैं वह परम पद को प्राप्त कर लेते हैं जो इसमें रूलता हैं वह संसारी जीव और जो इससे पार उतर जाता हैं वह मुक्तजीव कहलाता है। संसारी और मुक्तजीव में कोई अंतर नहीं है। ये करम सहित हैं और वे करम रहित हैं। जब तक करम बंध है तब तक संसार है कर्म बंध के नाश होते ही भगवान बन जाते हैं। यही सबसे बड़ी बात है कि सभी प्रपंचों को छोड़कर जिनेन्द्र भक्ति में लीन होकर, पंचमहाव्रतों को धारण कर संसार समुद्र को जलांजलि दे देना चाहिए।

जिनधर्म के माध्यम से भव्यजीवों का अंतःकरण शुद्ध होता हैं ऐसी भाषा पण्डित दौलत राम जी ने कही हैं।

चौदह गुणस्थानों में मार्गणायें

गति में सातों पृथ्वियों में पहले के चार गुणस्थान होते हैं।

प्रथम पृथ्वी के पर्याप्त, अपर्याप्त में (अवस्था में) मिथ्यात्व और असंयम दो, शेष छहः पृथ्वियों में अपर्याप्त अवस्था में एक मिथ्यात्व गुणस्थान ही होता हैं।

Scanned by CamScanner

तिर्यंचों के पर्याप्तक अवस्था में आदि के पाँच तथा अपर्याप्त अवस्था में मिथ्यादृष्टि, सासादन और सम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान होते हैं।

अपर्याप्तक अवस्था में तिर्यंञ्चनियों के मिथ्यात्व और सासादन दो ही होते हैं। क्योंकि सम्यक्त्व सहित जीव स्त्रियों में उत्पन्न नहीं होता।

पर्याप्त मनुष्यों के चौदह तथा अपर्याप्त मनुष्यों में मिथ्यात्व, सासादन और असंयत सम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान हैं।

मनुष्यनियों में पर्याप्त अवस्था में चौदह गुणस्थान होते हैं। भाव लिङ्ग ही अपेक्षा से क्योंकि द्रव्यलिङ्ग की अपेक्षा से स्त्रियों के मिथ्यात्व, सासादन,सम्यग् मिथ्यात्व, असंयत सम्यक्त्व और संयमासयंम ये पाँच गुणस्थान ही होते है। सम्यक्त्व सहित जीव भाव एवं द्रव्य दोनों ही स्त्रीवेद में उत्पन्न नहीं हो सकता अतः अपर्याप्त अवस्था में स्त्रीवेद के मिथ्यात्व और सासादन दो ही गुणस्थान होते हैं। अपर्याप्तक मनुष्यों और तिर्यंञ्चों में एक मिथ्यात्व गुणस्थान ही होता है।

देवगति– भवनत्रिक दोनों में पर्याप्तक अवस्था में आदि के चार तथा अपर्याप्तक में मिथ्यात्व और सासादन ये दोनों गुणस्थान होते हैं।

भवनत्रिक और सौधर्म, ईशान स्वर्ग की सभी देवियों में पर्याप्त अवस्था में आदि के चार गुणस्थान तथा अपर्याप्त अवस्था में मिथ्यात्व और सासादन दो

गुणस्थान होते हैं।

सौधर्म, ईशान से नवग्रैवेयक तक के पर्याप्तकों में मिथ्यात्व, सासादन, सम्यग् मिथ्यात्व और असंयत सम्यग्दृष्टि ये चार गुणस्थान तथा अपर्याप्तक अवस्था में मिथ्यात्व, सासादन, असंयत सम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान होते हैं।

अनुत्तर- एवं अनुदिश के पर्याप्त, अपर्याप्त दोनों ही अवस्था में एक असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान ही रहता है। क्योंकि इसमें सम्यग्दृष्टि ही जाते हैं।

इन्द्रिय- एक, द्वि, त्रि, इन्द्रियों और असंज्ञी पंचेन्द्रियों में एक मात्र मिथ्यात्व गुणस्थान होता है। संज्ञी पंचेन्द्रियों में चौदह गुणस्थान भी होते हैं।

काय- पृथ्वीकायादि से वनस्पति कायिक तक एक मिथ्यात्व गुणस्थान ही होता है। त्रयकायिकों में चौदह गुणस्थान भी होते हैं।

योग- सत्य मनोयोग, अनुभय मनोयोग, संज्ञी मिथ्यादृष्टि से लेकर तेरहवें गुणस्थान तक होता है। असत्य मनोयोग और उभय मनोयोग संज्ञी मिथ्यादृष्टि से लेकर १२ वें गुणस्थान तक होते हैं। अनुभय वचन योग दो इन्द्रिय से १३ वें गुणस्थान तक। सत्य वचन योग संज्ञी मिथ्यादृष्टि से १३ वें तक। असत्यवचन योग और उभय वचन योग में संज्ञी मिथ्यादृष्टि से लेकर १२ वें तक सर्व गुणस्थान होते हैं।

Scanned by CamScanner

औदारिक- काययोग मिथ्यात्व से लेकर १३ गुणस्थान (संयोगतक) होते हैं। औदारिक मिश्र काययोग में मिथ्यादृष्टि, सासादन सम्यग्दृष्टि असंयत सम्यग्दृष्टि और सयोग केवली ये चार गुणस्थान होते हैं।

वैक्रियक- काययोग में मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र और असंयत सम्यग्दृष्टि ये चार गुणस्थान होते हैं। वैक्रियक मिश्रकाययोग में इन चार में से मिश्र गुणस्थान के बिना तीन होते हैं। क्योंकि तीसरे गुणस्थान में मरण नहीं होता। जब तक पर्याप्तियों की पूर्णता नहीं तब तक ही वैक्रियिक मिश्र काययोग होता है। (अर्थात्मरण को छोड़कर)

आहारक- काय योग और आहारक मिश्र काय योग में प्रमत्त संयत गुणस्थान ही होता हैं।

कार्माण- काययोग में मिथ्यात्व, सासादन, असंयत सम्यग्दृष्टि और सयोग केवली ये चार गुणस्थान होते हैं।

अयोगी के चौदहवाँ गुणस्थान होता हैं।

वेद- स्त्रीवेद–पुरूषवेद में असंज्ञी पंचेन्द्रिय से लेकर अनिवृत्तिबादर साम्पराय तक नव गुणस्थान होते हैं। नपुंसक वेद में एकेन्द्रिय से अनिवृत्ति बादर साम्पराय तक नव गुणस्थान होते हैं। चारों ही गुणस्थानों में नारकी शुद्ध (द्रव्य भाव से) नपुंसक वेदी हैं। अर्थात् नपुंसक ही होते हैं। और एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय पर्यन्त जीव भी नपुंसक होते हैं। असंज्ञी पंचेन्द्रिय से

लेकर पंचम गुणस्थान तक तिर्यञ्च तीन वेद वाले होते हैं। मनुष्य मिथ्यादृष्टि गुणसथान से नवें गुणस्थान तक तीनों वेदी हैं। दसवें के ऊपर चौदह तक अपगत वेदी होते हैं। देवों में चारों ही गुणस्थानों में स्त्री पुरूष दो ही वेद होते हैं।

कषाय- क्रोध, मान, माया कषायों में एकेन्द्रिय आदि से नवें गुणस्थान तक हैं। लोभ कषाय एकेन्द्रिय से लेकर सूक्ष्म साम्परायिक दसवें गुणस्थान तक हैं। दसवें के आगे सर्वगुणस्थानवर्ती जीव कषाय रहित होते हैं।

ज्ञान- कुमति कुश्रुत ज्ञान में एकेन्द्रिय से लेकर मिथ्यात्व और सासादन तक जीव रहता है। कुअवधि ा में पंचेन्द्रिय पर्याप्तक ही होते हैं। अपर्याप्तक नहीं, यह ज्ञान भी (ज्ञान वाले में) मिथ्यात्व, सासादन दो गुणस्थान में होता है। तीन मिश्र ज्ञान तीसरे गुणस्थान में होते हैं। मति ज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान चतुर्थ से १२ वें तक मनःपर्यय ज्ञान प्रमत्त संयत से बारहवें तक होता है। केवल ज्ञानी के संयोग और अयोग दो गुणस्थान हैं।

संयम- सामायिक, छेदोपस्थापना प्रमत्त से नवें गुणस्थान तक रहता है। परिहार विशुद्धि संयम में प्रमत्त अप्रमत्त दो ही गुणस्थान होते हैं। इसमें ये ज्ञात हो जाता है कि सप्तम गुणस्थान में भी प्रवृत्ति होती हैं। कुछ लोग सप्तम गुणस्थान में ध्यान ही मानते हैं।

Scanned by CamScanner

प्रवृत्ति नहीं मानते यह ठीक नहीं। खाते, पीते, सोते सप्तम गुणस्थान हो होता है। हाँ यह प्रवृत्ति स्वस्थान में ही होता सातिशय में तो ध्यान ही होता है। सूक्ष्मसाम्पराय संयम में मात्र एक दसवाँ गुणस्थान, यथाख्यात में ११ से १४ वें तक चार। संयमासंयम में एक पाँचवा और असंयम में आदि के चार गुणस्थान होते हैं।

दर्शन- चक्षुदर्शन चतुरिन्द्रिय से १२ वें गुणस्थान तक, अवधि दर्शन असंयम सम्यग्दृष्टि गुणस्थान से १२ तक तथा केवल दर्शन अन्त के दो गुणस्थानों में होता है।

लेश्या- आदि की तीन लेश्या में पहले से असंयत सम्यग्दृष्टि तक चार गुणस्थान। तेज पद्मलेश्या मिथ्यादृष्टि से अप्रमत्त संयत तक शुक्ल लेश्या संज्ञी मिथ्यादृष्टि से संयोग केवली तेरहवें गुणस्थान तक, अयोग केवली अलेश्या माने जाते हैं।

भव्य- भव्यत्व १४ गुणस्थानों में और अभव्यत्व मात्र मिथ्यात्व गुणस्थान में ही पाया जाता है।

सम्यक्त्व- क्षायिक सम्यक्त्व में असंयत सम्यग्दृष्टि आदि से अयोग केवली तक वेदक सम्यक्त्व असंयत सम्यग्दृष्टि से अप्रमत्त (४में), औपशमिक सम्यक्त्व में असंयत सम्यग्दृष्टि से ११वें तक। सासादन सम्यक्त्व में सम्यक् मिथ्यात्व और मिथ्यात्व ये अपने ही एक एक गुणस्थान है। नरक में प्रथम पृथ्वी में

क्षायिक, वेदक, औपशमिक सम्यक्त्व तथा असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान में तीन सम्यक्त्व होते हैं। अन्य पृथ्वीयों में वेदक, औपशमिक सम्यक्त्व होता है।

तिर्यञ्चों के चतुर्थ गुणस्थान में क्षायिक, वेदक, औपशमिक सम्यक्त्व होते हैं।

संयमासंयम- गुणस्थान में क्षायिक को छोड़कर दो होते हैं। क्योंकि क्षायिक सम्यग्दर्शन के साथ तिर्यञ्चायुबद्ध जीव भोगभूमि में ही उत्पन्न होता है।

तिर्यञ्चनियों- में चतुर्थ एवं पंचम दोनों गुणस्थान वर्तीनि के क्षायिक सम्यग्दर्शन नहीं होता है। क्योंकि सात प्रकृतियों की क्षपणा आरम्भ करने वाला पुल्लिंग कर्म भूमियाँ मानव ही होता है। और वह मरकर पुल्लिंग में ही उत्पन्न होता हैं स्त्रीलिंग में नहीं।

मनुष्यों में असंयम सम्यग्दृष्टि से संयतासंयत गुणस्थानों में क्षायिक, वेदक और औपशमिक ११वें तक क्षायिक १४वें तक रहते हैं।

भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिष्क देव उनकी देवांगनाओं और सौधर्म, ईशान कल्पवासी देवांगनाओं में असंयत सम्यग्दृष्टि में क्षायिक सम्यग्दर्शन नहीं हैं। शेष दो सम्यक्त्व हैं। (देवांगनाओं की उत्पत्ति पहले दूसरे स्वर्ग तक ही है) सौधर्म से उपरिम ग्रैवेयक तक औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यग्दर्शन होते हैं। अनुत्तर और अनुदिश विमानवासी देवों में

Scanned by CamScanner

क्षायिक और क्षयोपशमिक ये दो सम्यग्दर्शन होते हैं। परन्तु जो उपशम श्रेणी में मरते हैं उनके औपशमिक भी हो सकता है।

संज्ञी – संज्ञी मिथ्यादृष्टि से लेकर १२वें तक हैं, असंज्ञी प्रथम गुणस्थान तक ही होते हैं। संज्ञी असंज्ञी उभय विकल्प से परे जीवों में सयोगी और अयोगी दो गुणस्थान होते हैं।

आहार – आहार मार्गणा में मिथ्यात्व से सयोगी केवली तक गुणस्थान होते हैं। उसमें विग्रहगति में सासादन, मिथ्यात्व और असंयत सम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान होते हैं तथा लोक पूर्ण और प्रतर समुद्घात अवस्था में सयोग केवली और अयोग केवली ऐसे पाँच गुणस्थान होते हैं। सिद्ध अवस्था गुणस्थानातीत है।

ग्रन्थ समाप्त

चौबीस ठाणा

संपादन एवं संशोधन

मुनि अमितसागर जी

सौजन्य

गुप्त दान

सोनीपत शहर

(1000 प्रतियाँ)

Scanned by CamScanner

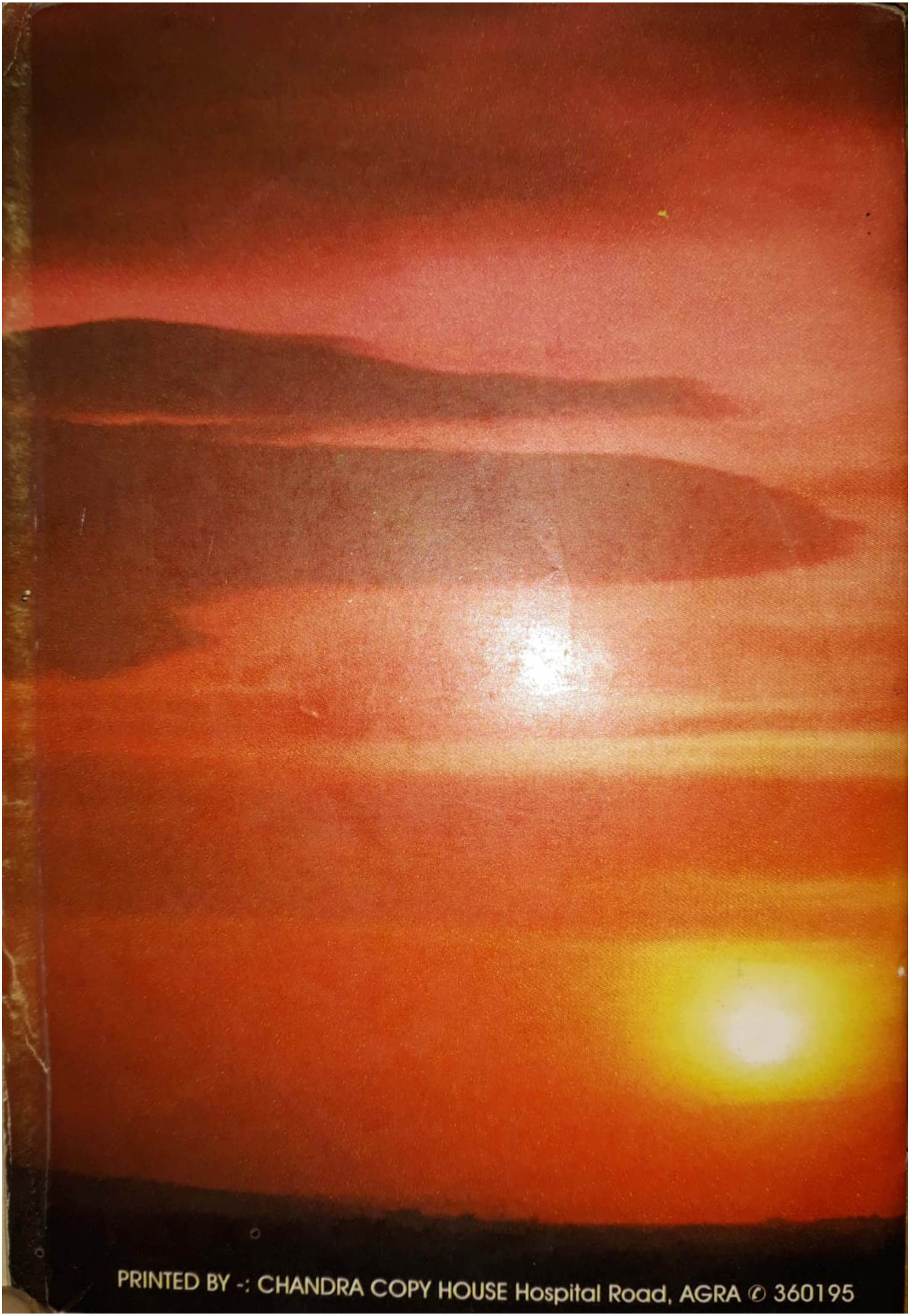

PRINTED BY -: CHANDRA COPY HOUSE Hospital Road, AGRA ✆ 360195

Scanned by CamScanner